E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 103 प्रयागराज, मंगलवार 30 जून, 2026 पृष्ठ- 8 मूल्य : 3.00 रूपये

अमेरिका और ईरान एक-दूसरे पर हमले रोकने पर करार, कल कतर में फिर होगी बातचीत

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका और ईरान ने फिलहाल एक-दूसरे पर सैन्य हमले रोकने पर सहमति जताई है। दोनों देशों के बीच पिछले 3 दिनों से हमले जारी थे। अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक, अमेरिका-ईरान में 17 जून को हुए समझौते के सभी बिंदुओं पर बातचीत जारी रहेगी। इसी सिलसिले में मंगलवार को कतर में दोनों देशों के प्रतिनिधि तकनीकी स्तर की वार्ता करेंगे। समझौते के तहत होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले व्यावसायिक जहाजों की आवाजाही नहीं रोकी जाएगी। हाल के दिनों में इसी जलमार्ग को लेकर दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया था। अमेरिका ने ईरान के मिसाइल और रडार ठिकानों पर कार्रवाई की थी, जबकि ईरान ने जवाब में कुवैत और बहरीन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया था। इसके बाद दोनों देशों ने फिलहाल सैन्य कार्रवाई रोककर बातचीत के जरिए समाधान तलाशने पर सहमति जताई है।पिछले 24 घंटे के 4 बड़े अपडेट्स:-अमेरिका का ईरान पर हमला: अमेरिका ने लगातार दूसरे दिन ईरान पर हवाई हमले किए। इस दौरान किश्म द्वीप, सिरिक और बंदर-ए-लेंगेह को निशाना बनाया गया। इसके बाद ईरान ने जवाबी कार्रवाई में बहरीन और कुवैत में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले किए। ईरान बोला- 30 दिन तक होर्मुज हमारे कंट्रोल में: ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि अगले 30 दिनों तक होर्मुज पूरी तरह ईरान के नियंत्रण में रहेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि अमेरिका ने आगे हमला किया तो हालात और ज्यादा गंभीर हो जाएंगे। ट्रम्प ने ईरान को धमकी दी: अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अगर ईरान नहीं सुधरा तो उसका अस्तित्व नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो अमेरिका अपना शुरू किए गए सैन्य अभियान को पूरी तरह अंजाम तक पहुंचाएगा। ईरान बोला अमेरिका को नुकसान उठाना पड़ेगा: ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने कहा कि आने वाले दिनों में क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। अमेरिका-ईरान समझौते का आर्टिकल-5 बना विवाद की वजह:-ईरान और अमेरिका के बीच 17 जून को हुए समझौते का आर्टिकल-5 अब दोनों देशों के बीच नए विवाद की वजह बन गया है।

हालिया सैन्य हमलों के बाद दोनों पक्ष एक-दूसरे पर इस आर्टिकल का उल्लंघन करने का आरोप लगा रहे हैं। समझौते के आर्टिकल-5 के मुताबिक, ईरान 60 दिनों तक होर्मुज स्ट्रेट से फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच कॉमर्शियल जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करेगा। इस दौरान जहाजों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। समझौते में यह भी कहा गया है कि ईरान 30 दिनों के भीतर समुद्री मार्ग से तकनीकी और सैन्य बाधाएं हटाएगा तथा समुद्र में बिछाई गई बारूदी सुरंगों (माइन) को साफ करेगा, ताकि जहाजों की आवाजाही सामान्य हो सके। आर्टिकल-5 के तहत ईरान, ओमान और खाड़ी के अन्य तटीय देशों के साथ मिलकर होर्मुज स्ट्रेट के भविष्य के प्रबंधन और समुद्री सेवाओं को लेकर बातचीत करेगा। यह प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय कानून और तटीय देशों के संप्रभु अधिकारों के अनुरूप होगी।

अब अफ्रीका के सेशेल्स में भी यूपीआई से होगा पेमेंट,19 बड़े समझौतों पर मुहर

विक्टोरिया। भारत और सेशेल्स ने रविवार को 19 बड़े समझौतों और विकास परियोजनाओं का ऐलान किया। प्रधानमंत्री मोदी और सेशेल्स के राष्ट्रपति पैट्रिक हर्मिनी की मौजूदगी में हुए इन फैसलों से रक्षा, डिजिटल भुगतान, स्वास्थ्य, शिक्षा, अंतरिक्ष और समुद्री सुरक्षा जैसे कई क्षेत्रों में सहयोग मजबूत होगा। सबसे बड़ी घोषणा यह रही कि अब सेशेल्स में भी भारत की यूपीआई आधारित डिजिटल भुगतान व्यवस्था शुरू होगी। भारत ने अब तक 23 से अधिक देशों के साथ यूपीआई को लेकर समझौते किए हैं। फिलहाल 9 देशों में यूपीआई से भुगतान की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा भारत, सेशेल्स को 1,250 करोड़ रुपए की लाइन ऑफ क्रेडिट (लोन) देगा, जिससे वहां की विकास परियोजनाओं को पूरा किया जाएगा। दोनों देशों ने प्रत्यर्पण संधि, नए राष्ट्रीय अस्पताल की तैयारी और अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग जैसे अहम समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए। भारत ने सेशेल्स को एक फास्ट पेट्रोल वेसल, 10 यूटिलिटी वाहन, 5 नौकाएं, 6 एम्बुलेंस, 500 मीट्रिक टन चावल और 8,500 मीट्रिक टन सीमेंट भी सौंपा। इसके साथ ही साइबर सुरक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति बनी। ये घोषणाएं ऐसे समय हुई हैं, जब दोनों देश राजनयिक संबंधों के 50 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। सेशेल्स के गोल्डन जुबली

नेशनल डे में चीफ गेस्ट बने मोदीः- मोदी ने रविवार को सेशेल्स के 50वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में हिस्सा लिया। वह सेशेल्स के स्वतंत्रता दिवस समारोह में शामिल होने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। इस साल सेशेल्स की आजादी और भारत-सेशेल्स के बीच राजनयिक संबंधों के 50 वर्ष भी पूरे हुए हैं। राष्ट्रीय दिवस पर आयोजित परेड में असम राइफल्स, भारतीय नौसेना और नौसेना के मार्चिंग बैंड ने हिस्सा लिया। परेड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी भारतीय सैन्य दल के सम्मान में खड़े हो गए। भारतीय नौसेना के युद्धपोत आईएनएस तरकश और आईएनएस इक्षाक भी पोर्ट विक्टोरिया पहुंचे। इससे पहले उन्हें सेशेल्स के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'गार्जियन ऑफ ब्लू होराइजन' से सम्मानित किया गया। उन्हें अब तक 34 देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिल चुका है। पीएम मोदी के सेशेल्स दौरे की 4 खास बातेंः-1. गोल्डन जुबली नेशनल डे में मुख्य अतिथि-पीएम मोदी 29 जून को सेशल्स की आजादी के 50 साल पूरे होने पर मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होंगे। इस मौके पर भारतीय सशस्त्र बलों की एक टुकड़ी और भारतीय नौसेना का युद्धपोत आईएनएस तरकश और हाइड्रोग्राफिक सर्वे शिप आईएनएस इक्षक भी परेड और समारोह का हिस्सा बनेंगे। 2. 175 मिलियन डॉलर का आर्थिक पैकेजः- भारत ने सेशल्स के विकास और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए 175 मिलियन अमेरिकी डॉलर (1651 करोड़) के आर्थिक पैकेज की घोषणा की है। इसके अलावा भारत ने सेशेल्स को भारत में बना फास्ट पेट्रोल वेसल (एफपीवी) 'पीएस लेस्पवार' गिफ्ट किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत में निर्मित फास्ट पेट्रोल वेसल पीएस लेस्पवार सेशेल्स के राष्ट्रपति डॉ. पैट्रिक हर्मिनी को गिफ्ट किया।

मोदी के कैबिनेट से बाहर हो सकते हैं ये 6 मंत्री, 9 नए चेहरों के शामिल होने की सुगबुगाहट-बदलाव के पीछे की पूरी कहानी

नयी दिल्ली। धर्मेंद्र प्रधान और हरदीप सिंह पुरी की मोदी कैबिनेट शिक्षा मंत्री हैं। क्यों हटाए जा सकते हैंः कैटेगरी 01- धर्मेंद्र प्रधान

से छुट्टी हो सकती है। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का मंत्रालय बदले जाने और आरबीआई के पूर्व गवर्नर शक्तिकांत दास को नया के शिक्षामंत्री रहते 5 बड़ी लापरवाहियां हुईं- 2026 में नीट पेपर लीक, सीबीएसई बोर्ड की कॉपी चेकिंग में गड़बड़ी, यूजीसी

परफॉर्मेंस नहीं तो छुट्टी तय

वित्तमंत्री बनाए जाने की सुगबुगाहट है। सूत्रों के मुताबिक, मोदी मंत्रिमंडल में ये बड़ा फेरबदल अगले कुछ हफ्ते में हो सकता है। 1. धर्मेंद्र प्रधान, शिक्षा मंत्री-ये हैं कौनः संघ और विद्यार्थी परिषद के बैकग्राउंड वाले धर्मेंद्र प्रधान 2 बार राज्यसभा सांसद रह चुके हैं। अभी ओडिशा के संबलपुर से लोकसभा सांसद और पिछले 12 साल से मोदी सरकार में मंत्री। जुलाई 2021 से इक्विटी गाइडलाइन्स, 2024 में यूजीसी-नेट पेपर लीक और 2020 में आई नई शिक्षा नीति के लागू होने में देरी। इसके चलते केंद्र सरकार बार-बार बैकफुट पर दिखी। 2. हरदीप सिंह पुरी, पेट्रोलियम मंत्री-ये हैं कौनः 1974 बैच के रिटायर्ड आईएफएस अफसर हरदीप सिंह पुरी 2014 में बीजेपी से जुड़े।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

बांग्लादेश ने भारत से झोली से निकालकर चीन को क्यों दिया मोंगला पोर्ट, चीन सिर्फ 80 किमी दूर बैठेगा

ढाका। 22 से 26 जून 2026 तक बांग्लादेशी पीएम तारिक रहमान चीन में थे। इसी दौरान बांग्लादेश ने अपने मोंगला पोर्ट का प्रोजेक्ट भारत से छीनकर चीन को दे दिया। यानी हमारे तट से महज 80 किमी दूर मोंगला पोर्ट पर चीन बैठेगा। भारत की 'चिकन नेक' से 100 किमी दूर तीस्ता नदी को भी चीन मैनेज करेगा। पहले समझतें हैं की आख़िर क्यों बांग्लादेश ने भारत से मोंगला प्रोजेक्ट छीनकर चीन को क्यों दिया? दरअसल 2015 में बांग्लादेश ने भारत से दो इकॉनमिक जोन बनाने के लिए समझौता किया था। इनमें एक मोंगला पोर्ट और दूसरा चटगांव पोर्ट का इलाका था। बांग्लादेशी अखबार द बिजनेस स्टैंडर्ड के मुताबिक, मोंगला प्रोजेक्ट की शुरुआत में भारत के पैसे से मोंगला पोर्ट से खुलना के बीच एक नई रेलवे लाइन बनी। 2018 में भारत सरकार ने मोंगला प्रोजेक्ट का ठेका हीरानंदानी ग्रुप को दिया। मार्च 2022 में बांग्लादेश इकॉनोमिक जोन अथॉरिटी यानी 'बेज़ा' और हीरानंदानी ग्रुप की कंपनी एविटा कंस्ट्रक्शंस प्राइवेट लिमिटेड के बीच समझौता हुआ। हालांकि अगस्त

2024 में बांग्लादेश में शेख हसीना का तख्तापलट होने के चलते ये प्रोजेक्ट रुक गया।शेख हसीना तब भारत आ गई थीं और बांग्लादेश के अंतरिम राष्ट्रपति बने मुहम्मद यूनुस के दौर में इस प्रोजेक्ट पर बात आगे नहीं बढ़ी। हसीना के बाद एंटी इंडियन मानी जाने वाली खालिदा जिया की पार्टी बीएनपी सत्ता में आई और फरवरी 2026 में उनके बेटे तारिक रहमान पीएम बने। 'बेज़ा' के मुताबिक, भारतीय कंपनी तय शर्त के मुताबिक दो साल के भीतर काम शुरू नहीं कर पाई। इसी बीच जून 2025 में बांग्लादेश में तैनात चीनी दूतावास के ऑफिसर्स ने मोंगला पोर्ट पर एक चीनी इकॉनोमिक जोन बनाने का प्रस्ताव दिया। इसके बाद अक्टूबर 2025 में बांग्लादेश सरकार ने भारत के साथ प्रोजेक्ट रद्द कर दिया।25 जून 2026 को तारिक रहमान के चीन दौरे के बीच 'बेज़ा' और चीन की सरकारी कंपनी चाइना सिविल इंजीनियरिंग कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन (सीसीईसीसी) के बीच पोर्ट के आसपास की 110 एकड़ जमीन पर इकॉनोमिक जोन बनाने का समझौता हुआ है। इसके अलावा 25 मार्च 2025 को मोंगला पोर्ट अथॉरिटी (एमपीए) और सीसीईसीसी के बीच मोंगला पोर्ट के डेवेलपमेंट के लिए 370 मिलियन डॉलर के एक अलग प्रोजेक्ट पर भी समझौता हुआ था।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

सऊदी अरब में हेलिकॉप्टर क्रैश-14 लोगों की मौत, सभी सऊदी नागरिक

नई दिल्ली। सऊदी अरब के रास तनुरा में रविवार को दुनिया की सबसे बड़ी तेल कंपनी अरामको

का हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया। हादसे में हेलिकॉप्टर सवार सभी 14 लोगों की मौत हो गई। सऊदी प्रेस एजेंसी (एसपीए) के मुताबिक, हेलिकॉप्टर में सवार सभी लोग सऊदी अरब के ही नागरिक थे। हालांकि, क्रैश की वजह की जानकारी अभी सामने नहीं आई है। अधिकारी मामले की जांच कर रहे हैं। सऊदी अरामको दुनिया की सबसे बड़ी तेल और गैस कंपनियों में से एक है। यह सऊदी अरब सरकार के स्वामित्व में है। इसकी स्थापना 1933 में अमेरिकी कंपनियों के साथ समझौते के तहत हुई थी। 1980 में यह पूरी तरह सऊदी सरकार के नियंत्रण में आ गई। कंपनी का मुख्यालय धहरान में स्थित है। अरामको के पास दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडारों में से एक है और यह प्रतिदिन लाखों बैरल कच्चे तेल का उत्पादन करती है, जिससे यह वैश्विक ऊर्जा बाजार की प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गई है। सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था काफी हद तक इसी कंपनी की आय पर निर्भर करती है। अरामको केवल कच्चे तेल का उत्पादन ही नहीं करती, बल्कि रिफाइनिंग, पेट्रोकेमिकल्स और प्राकृतिक गैस के क्षेत्र में भी सक्रिय है। इसके नियंत्रण में दुनिया का सबसे बड़ा पारंपरिक तेल क्षेत्र, गवार, भी आता है। 2019 में कंपनी ने शेयर बाजार में अपना आईपीओ लॉन्च किया, जिसे इतिहास का सबसे बड़ा आईपीओ माना गया। हाल के वर्षों में अरामको रिन्यूबल एनर्जी, हाइड्रोजन और कार्बन कैप्चर जैसी तकनीकों में निवेश बढ़ा रही है।

पाक का दावा- अफगानिस्तान में तीन ठिकानों पर हमले किए,टीटीपी कमांडर समेत 29 आतंकी मारे

एक दिन पहले कराची में आतंकी हमला हुआ था

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में तीन ठिकानों पर अटैक करने का दावा किया है। पाकिस्तान के मुताबिक, पहले खैबर पख्तूनख्वा के बाजौर जिले में जमीनी ऑपरेशन किया गया। इसके बाद सीमा पार अफगानिस्तान के भीतर तीन आतंकियों के ठिकानों पर हमले किए गए। इन हमलों में 29 आतंकियों को मार गिराया हैं। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने एक्स पर लिखा- यह ऑपरेशन देश में हाल के आतंकी हमलों के जवाब में किया गया। इसमें जमात-उल-अहरार और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के ठिकानों को निशाना बनाया गया। टीटीपी का कमांडर खान फरोश भी मारा गया। इससे एक दिन पहले पाकिस्तान के कराची में सिंध रेंजर्स के हेडकॉर्टर पर हथियारों और विस्फोटकों से लैस आतंकियों ने हमला किया था। इसमें चार रेंजर्स जवान मारे गए थे। वहीं, छह हमलावर मारे गए थे। इस हमले की जिम्मेदारी जमात-उल-अहरार ने ली थी। बाजौर में 4, अफगानिस्तान में 25 आतंकी मारे-

अताउल्लाह तरार ने बताया कि खुफिया जानकारी मिलने पर बाजौर जिले में ऑपरेशन शुरू किया गया। इसमें खान फरोश समेत चार आतंकी मारे गए। खैबर पख्तूनख्वा का बाजौर, अफगानिस्तान से लगा जिला है। इसके बाद अफगानिस्तान के पक्तिया, पक्तिका और कुनार प्रांतों में तीन अलग-अलग ठिकानों पर हमले किए गए। वहां 25 आतंकी मारे गए। इन ठिकानों पर रखा हथियार और गोला-बारूद भी नष्ट कर दिया गया। पाकिस्तान बोला- नागरिकों की सुरक्षा से समझौता नहीं करेंगेः-तरार ने कहा कि पाकिस्तान क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने की कोशिश करता रहा है, लेकिन अपने नागरिकों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करेगा। पाकिस्तान पिछले साल से अफगान सीमा और उसके भीतर कई बार हमले कर चुका है। उसका कहना है ये हमले टीटीपी और दूसरे आतंकी संगठनों के ठिकाने किए गए हैं। पाकिस्तान लंबे समय से आरोप लगाता रहा है कि अफगानिस्तान की तालिबान सरकार टीटीपी के आतंकियों को पनाह देती है। पाकिस्तान और टीटीपी में लड़ाई क्यों? 2001 में अमेरिका के अफगानिस्तान पर हमले के बाद पाकिस्तान ने अमेरिका का साथ दिया। इससे टीटीपी नाराज हो गया, वह इसे इस्लाम के खिलाफ मानता था। टीटीपी का मानना है कि पाकिस्तान सरकार सच्चा इस्लाम नहीं मानती है, इसलिए वो उसके खिलाफ हमला करता है।

फेसबुक बना जंगली जानवरों की अवैध तस्करी का सबसे बड़ा ऑनलाइन बाजार

नयी दिल्ली। वन्यजीव संरक्षण से जुड़े कई गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) की एक

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि फेसबुक दुनिया में अवैध वन्यजीव तस्करी का सबसे बड़ा ऑनलाइन बाजार बन गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, मेटा की कमजोर मॉडरेशन व्यवस्था और कंटेंट से कमाई (मॉनेटाइजेशन) की सुविधा इस अवैध कारोबार को बढ़ावा दे रही है। ग्लोबल इनिशिएटिव अगेंस्ट ट्रांसनेशनल ऑर्गेनाइज्ड क्राइम (जीआई-टीओसी) के अध्ययन में अप्रैल 2024 से मार्च 2026 के बीच सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 20 हजार से अधिक विज्ञापन और 2.60 लाख से ज्यादा वन्यजीव उत्पादों की बिक्री से जुड़े पोस्ट मिले। इनमें करीब 75फीसदी विज्ञापन फेसबुक पर पाए गए। रिपोर्ट के अनुसार, बिक्री के लिए पेश किए गए लगभग 84फीसदी वन्यजीव ऐसे थे, जिनके अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक व्यापार पर सीआईटीइएस संधि के तहत प्रतिबंध है। इनमें आधे से अधिक प्रजातियां संकटग्रस्त या अत्यंत संकटग्रस्त हैं। इन उत्पादों का कुल विज्ञापित मूल्य 6.6 करोड़ डॉलर (करीब 560 करोड़ रुपए) से अधिक बताया गया है। रिपोर्ट में पैंगोलिन, गैंडे के सींग, चिंपैंजी और संरक्षित पक्षियों समेत कई वन्यजीवों और उनके अंगों की खुलेआम बिक्री के उदाहरण दिए गए हैं। शोधकर्ताओं का आरोप है कि मेटा के विज्ञापन और सब्सक्रिप्शन जैसे मॉनेटाइजेशन मॉडल ऐसे अकाउंट्स को आर्थिक लाभ पहुंचाते हैं, जिससे अवैध तस्करी को बढ़ावा मिलता है।हालांकि, मेटा ने इन आरोपों पर विस्तृत प्रतिक्रिया देने से इनकार करते हुए कहा कि उसके प्लेटफॉर्म पर संकटग्रस्त वन्यजीवों और उनके उत्पादों की बिक्री प्रतिबंधित है।

फ्रांस में गर्मी से हजार लोगों की मौत, जर्मनी/स्पेन/ब्रिटेन समेत 16 देशों में रिकॉर्डतोड़ तापमान

पेरिस। यूरोप इन दिनों रिकॉर्डतोड़ हीटवेव की चपेट में है। फ्रांस में भीषण गर्मी से करीब 1,000 अतिरिक्त लोगों की मौत हुई है। हेल्थ एजेंसी ने रविवार को वहीं, जर्मनी, स्पेन, ब्रिटेन, डेनमार्क, इटली और स्विट्जरलैंड समेत 16 देशों में तापमान ने दशकों पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। न्यूज एजेंसी एएफ़पी के अनुमान के मुताबिक,

बताया कि ये मौतें 24 जून से 27 जून के बीच हुईं। अतिरिक्त मौतों का मतलब है कि पिछले कुछ साल में हुई औसत मौतों की तुलना में इस बार करीब 1000 लोग ज्यादा मरे हैं। हालांकि सरकार ने न ही पिछली बार और न ही इस बार का कोई सटीक आंकड़ा दिया है। अधिकारियों के मुताबिक मरने वालों में 85फीसदी बुजुर्ग हैं। सबसे अधिक मौतें घरों में हुईं। खासकर राजधानी पेरिस और उसके आसपास के इलाकों वाले इलाके में ऐसे मामले ज्यादा सामने आए। रविवार को यूरोप के करीब 19.1 करोड़ लोगों को 35 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक तापमान का सामना करना पड़ा। 40डिग्री भारत में सामान्य क्यों है? यूरोप में आपदा कैसे बन जाता है? जब भारत में तापमान 43डिग्री पहुंचता है, तो लोग इसे मई-जून की आम गर्मी मानकर सिर पर गमछा ओढ़ते हैं और आम पना पीते हुए काम पर निकल जाते हैं। लेकिन जब यही तापमान यूरोप में 40डिग्री पार करता है, तो वहां रेड अलर्ट जारी हो जाता है, ट्रेनें रुक जाती हैं और इसे एक 'राष्ट्रीय आपदा' घोषित कर दिया जाता है। इसके पीछे कोई एक वजह नहीं, बल्कि ज्योग्राफी, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंसानी शरीर की आदत का एक पूरा विज्ञान है। 1. इन्फ्रास्ट्रक्चर का फर्कः-यूरोपः घर और इमारतें गर्मी को अंदर रोकने के लिए बनाए जाते हैं, ताकि सर्दियों में कम हीटिंग की जरूरत पड़े। जब वहां गर्मी पड़ती है, तो ये घर 'ओवन' (तंदूर) की तुरंत ठंडा हो जाता है। यूरोपः यूरोप के लोगों का शरीर कम तापमान का आदी होता है। जब अचानक तापमान 40डिग्री पहुंचता है, तो उनका शरीर इस झटके को बर्दाश्त नहीं कर पाता। इससे हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और ऑर्गन फेलियर का खतरा बहुत तेजी से बढ़ता है। 3. ह्यूमिडिटी का फर्कः- गर्मी सिर्फ तापमान से नहीं, बल्कि

सड़कें पिघलीं, स्कूल बंद, जंगलों में आग

तरह काम करने लगते हैं। गर्मी अंदर तो आ जाती है, पर बाहर नहीं निकल पाती। भारतः घर इस तरह बनाए जाते हैं कि हवा का क्रॉस-वेंटिलेशन हो सके। ऊंची छतें, संगमरमर या टाइल्स के फर्श और खुली खिड़कियां गर्मी को रोकने के बजाय उसे बाहर निकालने में मदद करती हैं। 2. इंसानी शरीर की आदतः-भारतः हमारे शरीर को बचपन से ही हाई टेम्परेचर झेलने की आदत होती है। भारत के लोगों का 'थर्मोरेगुलेशन सिस्टम' (शरीर का तापमान नियंत्रित करने की क्षमता) अच्छा है। भारत के लोगों का शरीर ज्यादा गर्मी में पसीना बहाने लगता है जिससे शरीर को हवा में मौजूद नमी से तय होती है। भारत में मई और जून की सूखी गर्मी में पसीना जल्दी सूख जाता है, जिससे शरीर का तापमान कम होने में मदद मिलती है। यूरोप में जब गर्मी पड़ती है, तो हवा में नमी बहुत ज्यादा होती है। उमस के कारण शरीर का पसीना सूख नहीं पाता, जिससे शरीर खुद को ठंडा नहीं कर पाता। 40डिग्री तापमान वहां महसूस 45डिग्री या उससे ज्यादा जैसा होता है। कहीं सड़कें पिघल रही हैं, कहीं स्कूल बंद करने पड़े हैं, तो कहीं जंगलों में भीषण आग भड़क उठी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यूरोप का तापमान दुनिया के औसत तापमान की तुलना में ज्यादा तेजी से बढ़ रहा है। भविष्य में ऐसी गर्मी की लहरें और अधिक बार आएंगी, ज्यादा समय तक रहेंगी। यूरोपीय देशों में गर्मी की हालतः-ब्रिटेनः जून में गर्मी का 50 साल पुराना रिकॉर्ड 3 बार टूटा- ब्रिटेन के इतिहास में पहली बार लगातार तीन दिनों तक 'रेड वार्निंग' जारी करनी पड़ी है। जून के महीने का 50 साल पुराना पिछला रिकॉर्ड (35.6डिग्री) इस हफ्ते लगातार तीन दिन टूटा है। दक्षिणी इंग्लैंड में तापमान 36.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है, जो इस जून का नया रिकॉर्ड है। ब्रिटेन के इतिहास का सबसे अधिक तापमान 40.3 डिग्री सेल्सियस है, जो जुलाई 2022 में दर्ज किया गया था। माना जा रहा है कि यह इस साल टूट सकता है। गर्मी के कारण बिजली की मांग 45 साल में सबसे ज्यादा हो गई है। हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और सांस की तकलीफ के मरीजों की संख्या अचानक बहुत बढ़ गई है। इसके कारण कई बड़े अस्पतालों को इमरजेंसी घोषित करना पड़ा है। पूरे ब्रिटेन में 1,000 से अधिक स्कूलों को बंद करना पड़ा है। कंक्रीट और पुरानी तकनीक से बनी क्लासरूम की इमारतें इतनी गर्म हो गई हैं कि बच्चों और शिक्षकों का वहां बैठना मुश्किल हो गया है। गर्मी से लोहे की रेलवे पटरियां फैल रही हैं और उनके मुड़ने का खतरा बढ़ गया है। इसके कारण ट्रेनों की रफ्तार पर सख्त स्पीड लिमिट (60 मील प्रति घंटा) लगा दी गई है। इतना ही नहीं पानी बचाने के लिए कई इलाके में पाइप के जरिए बगीचों और कारों पर पानी डालने (होजपाइप) पर रोक लगा दी गई है। स्पेनः यूरोप में सबसे ज्यादा गर्मी, 45 डिग्री के पार पहुंचा पाराः-स्पेन इस समय पूरे यूरोप में सबसे ज्यादा तप रहा है। वहां एंडुजार शहर में तापमान 45.1 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा है। वहीं उत्तरी शहर बिलबाओ में जून का सर्वकालिक रिकॉर्ड टूटते हुए पारा 42.7डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पिछले 4 दिनों में गर्मी के कारण देश में 200 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। अत्यधिक सूखे और भीषण गर्मी के कारण स्पेन के जंगलों में भयंकर आग भड़क उठी है। दमकल विभाग चौबीसों घंटे आग बुझाने में जुटा है और कई कस्बों को खाली कराना पड़ा है। जर्मनीः 41.5 डिग्री तापमान- इतिहास में सबसे ज्यादा गर्मी- जर्मनी के ड्रैविट्ज शहर में शनिवार को तापमान 41.5 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। यह जर्मनी के इतिहास का अब तक का सबसे ज्यादा तापमान है।

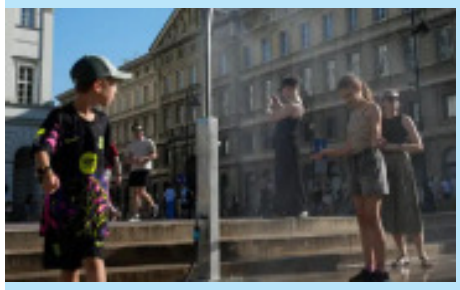

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने पेपर लीक और चढ़ावे पे भाजपा को घेरा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सपा प्रमुख अखिलेश यादव रविवार को प्रयागराज पहुंचे उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में पेपर लीक का मामला जोर-शोर से उठाया। सरकार द्वारा कराए गए एग्जाम और लीक पेपर का ब्यौरा पत्रकारों के सामने रखा। उन्होंने इस बात पर चुटकी ली की एयरफोर्स के जरिए पेपर ले जाए जाएंगे । अब कौशांबी में पेपर ले जाना है तो क्या पहले वहां हेलीपैड बनाना पड़ेगा। उन्होंने छात्रों की अधिकतम आयु सीमा 3 साल परीक्षा के लिए और बढ़ाने की बात कही। अयोध्या में चंदा चोरी के प्रति हमला किया और कहा कि न भाजपा की डिक्शनरी में धर्म है और ना ही शर्म है। उन्होंने कहा कि भाजपा के लिए नेशन फर्स्ट नहीं है डोनेशन फर्स्ट है। उन्होंने चंदा चोरी और एक मंत्री का विभाग कम किए जाने को कर्नाटक से भी जोड़ा। नेशन नहीं डोनेशन फर्स्ट की बात कह कर कई बार

व्यंग्य किया। डबल इंजन सरकार में डबल टंकी है जिससे भ्रष्टाचार बढ़ा है। अपराध बड़ा है क्योंकि पुलिस वाले अब राजनीतिक काम कर रहे हैं। इसी तरह राम मंदिर में मुख्यमंत्री बहुत बार गए लेकिन चोरी होती रही चिराग तले अंधेरा। सांसदों को तोड़कर संविधान को बदलना चाहते हैं। झूठे आरोप लगाने वालों की सच्ची चोरी भगवान ने खोल दी। इंडिया गठबंधन को और मजबूत बनाया जाएगा। रामधन का हिसाब जनता मांग रही है। चोर चोर सौतेले भाई। जिन्होने चुराई राम की पाई। देखो जा रहा वो भाजपाई, जिसने खाई राम की पाई उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा कि अब इन्हें ना चंदा मिलेगा ना वोट 27 में सपा की सरकार आएगी।

नैनी में 'Talabis' इन-हाउस मैन्युफैक्चरिंग यूनिट एवं बुटीक का शुभारंभ, फैशन डिजाइनिंग प्रशिक्षण के साथ मिलेगा रोजगार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज, नैनी। नैनी क्षेत्र में 'Talabis' इन-हाउस मैन्युफैक्चरिंग यूनिट एवं बुटीकड का शुभारंभ किया गया। यह केंद्र फैशन डिजाइनिंग, पारंपरिक हस्तशिल्प और कौशल विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है। यहाँ ग्राहकों की पसंद के अनुसार परिधान तैयार किए जाने के साथ-साथ स्थानीय युवाओं और महिलाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाएगा। संस्थान द्वारा Naini ITC के सहयोग से 6 माह का फैशन डिजाइनिंग क्रैश कोर्स तथा 3 माह का बेसिक स्टिचिंग (सिलाई) कोर्स संचालित किया जाएगा, जिससे प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं को स्वरोजगार एवं रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। पारंपरिक कला और आधुनिक फैशन का समन्वयः- संस्थान की संचालिका ने बताया कि 'Talabis' शब्द का अर्थ 'कपड़ा' होता है। संस्थान का उद्देश्य भारत की समृद्ध पारंपरिक कला एवं शिल्प को आधुनिक फैशन से जोड़ना है। यहाँ ग्रामीण महिलाओं की पारंपरिक थ्रेड वर्क, चिकनकारी, हैंडवर्क, प्राकृतिक रंगों से पेंटिंग एवं प्रिंटिंग, जूट से ज्वेलरी एवं

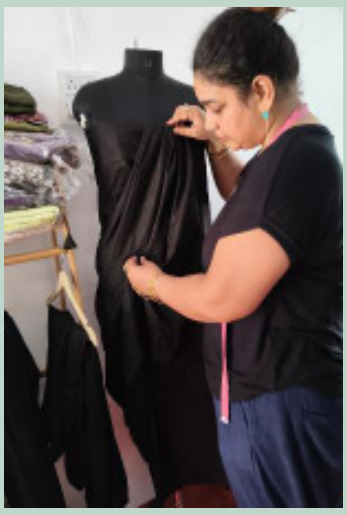

परिधान, बांस शिल्प तथा पत्तों से ज्वेलरी निर्माणड जैसी विलुप्त होती कलाओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मशीन आधारित तकनीक और पारंपरिक हस्तकला के समन्वय से स्थानीय स्तर पर अधिक से अधिक रोजगार सृजित करना संस्थान का प्रमुख लक्ष्य है। ग्राहकों की पसंद के अनुसार तैयार होंगे परिधान- 'Talabis' में ब्लाउज, सूट, लहंगा, इंडो-वेस्टर्न गाउन, वेस्टर्न गाउन, अरेबिक ड्रेसेस, स्कूल एवं संस्थागत यूनिफॉर्म सहित विभिन्न प्रकार के परिधान ग्राहकों की पसंद और माप के अनुसार तैयार किए जाएंगे। साथ ही जूट और बांस से निर्मित पर्यावरण अनुकूल परिधान एवं ज्वेलरी भी उपलब्ध रहेगी। यदि ग्राहक के पास अपना डिज़ाइन नहीं है, तो विशेषज्ञ डिजाइनर उनकी पसंद के अनुसार कस्टमाइज्ड डिज़ाइन तैयार करेंगे। रोजगार और कौशल विकास का नया केंद्रः- संस्थान की संचालिका ने कहा कि उनका उद्देश्य समाज के उन वर्गों तक फैशन और डिजाइनिंग की शिक्षा पहुँचाना है, जो अब तक इस क्षेत्र से दूर रहे हैं। आधुनिक फैशन की जानकारी देने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं पारंपरिक कलाओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाना भी इस पहल का प्रमुख उद्देश्य है।

स्थानीय युवाओं और महिलाओं के लिए 'Talabis' अब कौशल विकास, स्वरोजगार और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने वाला एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभर रहा है।

मीडिया क्लब में बड़ा संगठनात्मक फेरबदल, कुलदीप सिंह निष्कासित, प्रशान्त शर्मा बने नए उपाध्यक्ष

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज, 27 जून। मीडिया क्लब की कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक शनिवार को आयोजित की गई। बैठक में मुख्य ट्रस्टी, उपट्रस्टी, कार्यकारिणी सदस्यों एवं सामान्य सदस्यों की उपस्थिति में संगठन से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लेते हुए कुलदीप सिंह को मीडिया क्लब के उपट्रस्टी, उपाध्यक्ष पद तथा सामान्य सदस्यता से तत्काल प्रभाव से निष्कासित कर दिया गया। इसके बाद संगठन की कार्यप्रणाली को और सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से सर्वसम्मति से प्रशान्त शर्मा को मीडिया क्लब का नया उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनकी नियुक्ति पर

उपस्थित सभी सदस्यों ने उनका स्वागत करते हुए सफल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दीं। बैठक में पदाधिकारियों ने कहा कि संगठन के हित, अनुशासन एवं गरिमा को सर्वोपरि रखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

साथ ही विश्वास व्यक्त किया गया कि नव-नियुक्त उपाध्यक्ष प्रशान्त शर्मा के नेतृत्व में मीडिया क्लब संगठनात्मक गतिविधियों को और मजबूती प्रदान करेगा। वही इस मौके पर मीडिया क्लब के अध्यक्ष अनुपम शुक्ला वरिष्ठ उपाध्यक्ष इमरान युसूफी कोषाध्यक्ष अनवर खान संगठन मंत्री जिया सिद्दीकी नवनियुक्त उपाध्यक्ष प्रशांत शर्मा प्रकाशन मंत्री टी के पांडे सह प्रकाशन मंत्री शकील खान कार्यालय प्रभारी जी एन वैश सह कार्यालय प्रभारी विलास गुप्ता मीडिया क्लब के सदस्य सलमान अहमद अनुराग दुबे सैयद मोहम्मद आमिर अब्दुल कलाम राईन दिलीप जायसवाल आनंद श्रीवास्तव शिवजी मालवीय ए के नय्यर अजय कुशवाहा आकाश गुप्ता असद कुरैशी ज्ञानेश्वर शर्मा सौरभ आदर्श कारी आरफीन आदित्य विक्रम सिंह श्यामू कुशवाहा रामविलास शिवम त्रिपाठी शिशिर गुप्ता अभिषेक गुप्ता समेत कई मीडिया क्लब के सदस्य उपस्थित रहे।

अट्ठाइस घंटों में पूरा हुआ बुद्ध चरित मानस का अखंड पारायण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। सम्राट महापद्मनंद बुद्ध विहार गौरीगंज मुसाफिरखाना रोड कान्हा मैरिज लान के पीछे गौरीगंज के सम्राट महापद्मनंद बुद्ध विहार में आयोजित बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य का अखंड पारायण दूसरे दिन अट्ठाइस घंटों में पूरा हुआ। ज्ञातव्य है कि के पी सविता बौद्ध पूर्व प्रधानाध्यापक गौरीगंज और महामंत्री भारतीय बौद्ध महासभा 30 प्र0 शाखा जनपद अमेठी द्वारा रचित इस प्रबंध काव्य का गौरीगंज में पहली बार अखंड पारायण शुरू कराया गया था जिसके पूरे पारायण के लगने वाले समय को लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे। आखिरकार बौद्ध उपासकों व कतिपय अन्य लोगों के सहयोग से साढ़े चार बजे अखंड पारायण साढ़े चार बजे तक पूरा कर लिया गया। अंत में बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य की आरती का

सामूहिक संगायन के साथ यह अखंड पारायण पूरा कर लिया गया। इसके प्रमुख सहयोगियों में बौद्ध धर्म गुरु ज्ञयी भंते धम्म दीप भंते भंते प्रज्ञा मित्र भंते शीलरतन गुरु प्रसाद बौद्धाचार्य आर बी चक्रवर्ती आयोजक के पी सविता बौद्ध पूर्व प्रधानाध्यापक एवं रचयिता बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य और महामंत्री भारतीय बौद्ध महासभा 30 प्र0 शाखा जनपद अमेठी श्याम लाल भारती, गुरु प्रसाद बौद्धाचार्य, हरीलाल गौतम, रामबहादुर बौद्धाचार्य महमदपुर, सोहन लाल, रामजियावन मौर्य, आर सी मौर्य, अनिल कुमार मौर्य मास्टर घनश्याम शर्मा आदि रहे।

राष्ट्रीय सोशल इम्पैक्ट अवार्ड से सम्मानित हुए भदोही के कैलाश नाथ शर्मा, जिले का बढ़ाया मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ/भदोही। रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट सामाजिक योगदान के लिए भदोही जनपद के गड़ौरा अभोली निवासी समाजसेवी कैलाश नाथ शर्मा जिला अध्यक्ष भारतीय नाई कल्याण विकास सेवा समिति जौनपुर को रविवार, 28 जून 2026 को लखनऊ में आयोजित 'संवेदना-2 : राष्ट्रीय सामाजिक प्रभाव पुरस्कार समारोह' में प्रतिष्ठित नेशनल सोशल इम्पैक्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह समारोह टीम निफा उत्तर प्रदेश एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ऑफ एक्सीलेंस (इंग्लैंड) के संयुक्त तत्वावधान में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में आयोजित हुआ। कैलाश नाथ शर्मा ने भदोही में अनेक सफल रक्तदान शिविर आयोजित कर सैकड़ों जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराने तथा युवाओं को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस अवसर पर निफा उत्तर प्रदेश एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ऑफ

दिया है। इस अवसर पर निफा उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप कुमार दुबे ने कहा कि, 'आप सभी का योगदान समाज में आशा जगाता है और आपकी करुणा वास्तविक परिवर्तन लाती है।' उन्होंने अधिक से अधिक लोगों से स्वैच्छिक रक्तदान अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। कैलाश नाथ शर्मा को मिले इस राष्ट्रीय सम्मान से जनपद का गौरव बढ़ा है तथा युवाओं में रक्तदान के प्रति नई प्रेरणा और सकारात्मक संदेश पहुंचा है।

राष्ट्रीय सोशल इम्पैक्ट अवार्ड से सम्मानित हुए जौनपुर के नंदवंशी शैलेंद्र शर्मा, जिले का बढ़ाया मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ/जौनपुर। रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट सामाजिक योगदान के लिए जौनपुर जनपद के रैभानी पुर बदलापुर निवासी समाजसेवी नंदवंशी शैलेंद्र शर्मा मुख्य सचिव भारतीय नाई कल्याण विकास सेवा समिति एवं प्रदेश संरक्षक नई उम्मीद फाउंडेशन ,को रविवार, 28 जून 2026 को लखनऊ में आयोजित 'संवेदना-2 : राष्ट्रीय सामाजिक प्रभाव पुरस्कार समारोह' में प्रतिष्ठित नेशनल सोशल इम्पैक्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह समारोह टीम निफा उत्तर प्रदेश एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ऑफ एक्सीलेंस (इंग्लैंड) के संयुक्त तत्वावधान में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार (लखनऊ)में आयोजित हुआ। नंदवंशी शैलेंद्र शर्मा ने जौनपुर बदलापुर मछली

शहर आदि जगहों पर अनेक सफल रक्तदान शिविर आयोजित कर सैकड़ों जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराने तथा युवाओं को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस अवसर पर निफा उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप कुमार दुबे ने कहा कि, 'आप सभी का योगदान समाज में आशा जगाता है और आपकी करुणा वास्तविक परिवर्तन लाती है।' उन्होंने अधिक से अधिक लोगों से स्वैच्छिक रक्तदान अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। नंदवंशी शैलेंद्र शर्मा को मिले इस राष्ट्रीय सम्मान से जनपद का गौरव बढ़ा है तथा युवाओं में रक्तदान के प्रति नई प्रेरणा और सकारात्मक संदेश पहुंचा है साथ ही साथ नंदवंशी शैलेंद्र शर्मा ने इस सम्मान के पीछे रक्तदान मिशन के प्रेरक और राष्ट्रीय सेवा रत्न अवार्ड से सम्मानित महापदमनंद वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन एम डब्ल्यू ओ के प्रांतीय अध्यक्ष घनश्याम शर्मा को प्रमुखता देते हुए अपने जनपद के सभी रक्तदानियों और अपने संस्था भारतीय नाई कल्याण विकास सेवा समिति के पदाधिकारियों के मजबूत सहयोग के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

रामलीला मैदान से गूंजेगी गुर्जर समाज की आवाज, राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व की उठेगी मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। अखिल भारतीय गुर्जर महासभा की ओर से सोमवार को नोएडा के सेक्टर-61 में 'राष्ट्र की राजनीति और गुर्जर समाज का समावेश' विषय पर एक विचार गोष्ठी एवं पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में गुर्जर समाज की भागीदारी, प्रतिनिधित्व, सामाजिक सशक्तिकरण, शिक्षा और राष्ट्र निर्माण में समाज की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की गई। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार हरिश्चंद्र भाटी ने कहा कि गुर्जर समाज ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश के विकास और सुरक्षा तक हर क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है, लेकिन आज़ादी के दशकों बाद भी समाज को राष्ट्रीय राजनीति में उसके योगदान के अनुरूप प्रतिनिधित्व नहीं मिल सका है। उन्होंने कहा कि विभिन्न राजनीतिक दल समय-समय पर समाज का समर्थन तो लेते हैं, लेकिन सत्ता और संगठन में उचित भागीदारी देने से पीछे हट जाते हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार आगामी मंत्रिमंडल विस्तार में गुर्जर समाज का कैबिनेट मंत्री पद सुनिश्चित करें।

डीएम ने बच्चों को पोलियो की दो बूंद पिलाकर अभियान का किया शुभारंभ

जिलाधिकारी ने जिला (महिला) अस्पताल परिसर से किया पल्स पोलियों अभियान का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। रविवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने जिला (महिला) अस्पताल परिसर के बूथ से पल्स पोलियों अभियान के अन्तर्गत बूथ डे के अवसर पर बच्चों को पोलियों की दो बूंद पिलाकर अभियान का शुभारंभ किया। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद को पोलियों मुक्त रखने के लिए अभियान में किसी भी स्तर पर कोई लापरवाही न बरती जाएं, शत प्रतिशत बच्चों को पोलियों की खुराक से आच्छादित किया जाए।जिलाधिकारी ने बताया कि जनपद में कुल 1672 बूथ बनाए गए हैं जहां पर 0 वर्ष से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी, जनपद के कुल 367432 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य है, जो बच्चे रविवार को पोलियो की खुराक पीने से छूट जाएंगे उन्हें अगले 5 दिनों तक 1167 टीम द्वारा घर-घर जाकर पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। जिलाधिकारी ने

संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी तैयारियां पूर्ण करा ली जाए समस्त जनपद स्तरीय अधिकारी क्षेत्र में भ्रमणशील रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान करेंगे। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चंद्रा द्वारा अवगत कराया गया कि पल्स पोलियो अभियान को सफल बनाने के लिए 31 ट्रांजिट टीम, 38 मोबाइल टीम, 337 सुपर वाइजर को लगाया गया है। जनपद में कुल 19 कोल्ड चेन प्वाइट है। जनपद को 381200 पोलियो वैक्सीन-डोज उपलब्ध है। उन्होंने बताया है कि सभी ब्लाक को पर्याप्त मात्रा में पोलियो वैक्सीन व लॉजिस्टिक उपलब्ध करा दी गयी है। पल्स पोलियो अभियान के सफल कियान्वयन/पर्यवेक्षण हेतु ब्लाक स्तरीय नोडल अधिकारी नामित किए गए हैं। पल्स पोलियो अभियान की सफलता हेतु सम्बन्धित विभागों से समन्वय स्थापित किया जा चुका है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चंद्रा सहित संबंधित अधिकारीगण/चिकित्सक उपस्थित रहें।

ज्योतिषाचार्य स्व. पंडित राममूर्ति द्विवेदी की याद में साधु संतों और ज्योतिषाचार्य के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी। पदम सेन मनमोहन

हनुमान धाम मनुपुर मनैया में ज्योतिषाचार्य स्व. पंडित राममूर्ति द्विवेदी की याद में साधु संतों और ज्योतिषाचार्य के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सच्चा बाबा आश्रम के महंत स्वामी डॉक्टर चंद्रदेव जी महाराज ने कहा कि पिता के कर्ज को उतारने के लिए पुत्र को धर्म के रास्ते पर चलना अनिवार्य है। धर्म के रास्ते पर चलने वाले मनुष्य के जीवन की कई बढ़ाएं स्वयं कट जाती है। मनमोहन द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया आश्रम के महंत डॉक्टर श्री प्रकाश द्विवेदी उर्फ छोटे महाराज ने धन्यवाद ज्ञापित किया संचालन श्रमिक नेता आरएलडी दुबे ने किया इस अवसर पर डा अरविन्द कुमार सिंह डी एफ ओ, डा बिजेंद्र मिश्रा ज्योतिष के विभागाध्यक्ष नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, डा विजय लक्ष्मी गुप्ता निर्देशिका भारतीय ज्योतिष संस्थान, देवेन्द्र मिश्र नगरहा सदस्य उत्तर प्रदेश बार कौंसिल, अजय मिश्रा ज्योतिषाचार्य , प्रभाकर शुक्ला पूर्व प्राचार्य, कैलाश नाथ त्रिपाठी, संजय तिवारी, पुरणेंद प्रकाश पाण्डेय, पं राम गनेश पाण्डेय, आशुतोष तिवारी ज्योतिषाचार्य, राजेश शुक्ला जमुनापार जिलाध्यक्ष भाजपा आदि उपस्थित रहे।

पूर्व सैनिकों की समस्याओं के समाधान और संगठन विस्तार पर मंथन, कैप्टन जितेंद्र बहादुर सिंह बने जिलाध्यक्ष

पूर्व सैनिक संयुक्त संगठन की मासिक बैठक में पेंशन, ईसीएचएस, सीएसडी कैंटीन सहित सैनिक कल्याण से जुड़े मुद्दों पर हुई चर्चा,कारगिल विजय दिवस और स्वतंत्रता दिवस आयोजन की तैयारियों पर भी बनी रणनीति

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। रविवार को देश की सेवा में अपना अमूल्य योगदान देने वाले पूर्व सैनिकों की समस्याओं के समाधान और उनके अधिकारों की लड़ाई को मजबूती देने के उद्देश्य से पूर्व सैनिक संयुक्त संगठन उत्तर प्रदेश की रायबरेली इकाई की मासिक बैठक नव नियुक्त जिलाध्यक्ष वेटरन कैप्टन जितेंद्र बहादुर सिंह के तुलसी नगर प्रथम फेस स्थित आवास पर आयोजित की गई। बैठक में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे पूर्व सैनिकों ने अपनी समस्याएं रखीं, जिनके समाधान के लिए संगठन स्तर पर प्रभावी पहल करने का निर्णय लिया गया। बैठक की अध्यक्षता वेटरन संजीव त्रिवेदी फौजी ने की, जबकि संचालन हरिवंश सिंह चौहान फौजी ने किया। इस दौरान पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों से जुड़ी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा हुई। सैनिकों के शस्त्र लाइसेंस के नवीनीकरण एवं पंजीयन, पेंशन संबंधी मामलों, ईसीएचएस स्वास्थ्य सुविधा, सैनिक कल्याण योजनाओं और सीएसडी कैंटीन से संबंधित सुविधाओं को लेकर संगठन की आगामी रणनीति तय की गई। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि पूर्व सैनिकों की समस्याओं के निराकरण के लिए संगठन लगातार प्रयासरत रहेगा और जिले के प्रत्येक पूर्व सैनिक तक संगठन की पहुंच सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही आगामी कारगिल विजय दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रमों को भव्य रूप से आयोजित करने को लेकर भी रूपरेखा तैयार की गई। इस अवसर पर संगठन विस्तार को गति देते हुए प्रदेश महासचिव नरेंद्र सिंह फौजी ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। वेटरन कैप्टन जितेंद्र बहादुर सिंह को रायबरेली जिलाध्यक्ष, वेटरन घनेंद्र कुमार को जिला प्रभारी, वेटरन संजय सिंह को जिला मीडिया प्रभारी तथा वेटरन हरिवंश सिंह चौहान को जिला प्रवक्ता की जिम्मेदारी सौंपी गई। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने संगठन को और मजबूत बनाने तथा पूर्व सैनिकों एवं उनके परिवारों की समस्याओं के समाधान के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करने का संकल्प लिया। बैठक में बड़ी संख्या में नए सदस्यों को संगठन से जोड़ते हुए उनका स्वागत एवं अभिनंदन भी किया गया। बैठक में प्रदेश महासचिव नरेंद्र सिंह फौजी, जिलाध्यक्ष कैप्टन जितेंद्र बहादुर सिंह फौजी, हरिवंश सिंह चौहान फौजी, राम आशीष वर्मा फौजी, शिवकुमार सिंह फौजी, रंजीत बहादुर सिंह फौजी, दिलीप कुमार सिंह चौहान फौजी, दिलीप कुमार सिंह भदौरिया फौजी, अभय प्रताप सिंह फौजी, संजय कुमार सिंह फौजी, वीरेंद्र बहादुर सिंह फौजी, सत्येंद्र सिंह परिहार फौजी, सचिव पीयूष बल्लभ मिश्रा फौजी, शैलेंद्र कुमार त्रिवेदी फौजी, रामबरन यादव फौजी, रविंद्र प्रताप सिंह फौजी, हिम्मत बहादुर सिंह फौजी, श्रीधर वाजपेई फौजी, राम गजेंद्र सिंह चौहान फौजी, धर्मेंद्र सिंह फौजी, वीरेंद्र बहादुर सिंह फौजी, घनेंद्र कुमार यादव फौजी, अशोक कुमार यादव फौजी, सर्वेश कुमार सिंह फौजी, अमरेंद्र बहादुर सिंह फौजी सहित सैकड़ों पूर्व सैनिक साथी मौजूद रहे।

करोड़ों के भवन निर्माण में अनियमितता और मनमानी बरत रहा ठेकेदार, अधिकारी कर रहे अनदेखी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) शहडोल/ब्यौहारी। नगर के पंडित रामकिशोर शुक्ल स्मृति शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय परिसर में कराए जा रहे निर्माण कार्य को लेकर अनियमितता और भ्रष्टाचार किए जाने के आरोप लग रहे हैं। बताया जा रहा है कि, उक्त महाविद्यालय में तीन मंजिला इमारत का निर्माण तय मापदंडों के विपरीत कराया जा रहा है। जिसे उसकी गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। बताया गया है कि, उक्त निर्माण में गिट्टी, रेत, उस्ट और सीमेंट को तय मापदंड के विपरीत मिक्सर में फेटकर पिलर, बीम और छत को कलाई की जा रही है। जागरूक जनों ने मामले में जांच कराए जाने की मांग की है। मापदंड और तय अनुपात दरकिनारः-लोगों ने उक्त निर्माण कार्य के ठेकेदार की निर्माण से संबंधित विभागीय अधिकारियों की सांठगांठ की बात जनचर्चा का विषय बनी हुई है। कहां जा रहा है कि, विभागीय अधिकारियों के संरक्षण में ही गोहपारू निवासी तथाकथित ठेकेदार के हौसले बुलंद हैं। परिणाम स्वरूप पटियाः-तरीके से मनमानीपूर्ण निर्माण कार्य खुलेआम जारी है। वहीं इस मामले में महाविद्यालय प्रबंधन पर भी गंभीर आरोप लग रहे हैं। मापदंड और तप अनुपात को दरकिनार कर बन रहे इस तीन मंजिला इमारत को लेकर प्रबंधन की चुप्पी निखित तौर पर लग रहे आरोपों को बल प्रदान करते ही प्रदर्शित है।आंखें बंद कर अधिकारी बने हैंः-मेहरबान सवाल यह उठ रहे हैं कि आखिरकार इस घटिया निर्माण कार्य का जिम्मेदार कौन? क्या कमीशन के फेर में जिम्मेदारों ने अपनी आंखें मूंद रखी है या फिर मामला सुविधा शुल्क का है? जिसके चलते भ्रष्टचार की इबारत खुलेआम, बेखौफ होकर लिखी जा रही है। बिना पानी सिंचाई के एवं डस्ट मिक्स कर खड़ी हो रही यह तीन मंजिला इमारत हादसे का सबब भी बन सकती है। अगर ऐसा हुआ तो, तो जिम्मेदारी किसकी तय होगी? बताया गया है. मध्यप्रदेश भवन निर्माण विभाग के जारी टेंडर पर करोड़ों रुपये की लागत से यह काम कराया जा रहा है। जांच हुई तो कईयों पर गिरेगी गाजः- प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो, इस इमारत निर्माण में पिलर, बीम और छत तो पड़ गई है। लेकिन, उस पर कभी कोई पानी का हितृकाय या सिंचाई नहीं नहीं हुआ। जिससे बिल्डिंग की मजबूती पर संदेह बना हुआ है और इसके कमजोर होने का दावा भी किया गया है। काम में लगे लोगों ने बताया कि, यहां कभी कोई इंजीनियर नहीं आते। हां, कभी-कभी ठेकेदार जरूर आता है। उसका जैसा निर्देश मिलता है और जो निर्माण सामग्री उपलब्ध होती है, उसी का उपयोग किया जाता है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि, जिम्मेदार विभागीय अमले ने अपनी जेब गर्म कर ठेकेदार को मनमानी करने की खुली छूट दे रखी है। बहरहाल, वास्तविक रूप से सारा सच तो जांच के बाद ही सामने होगा। देखना होगा कि मामले में जांच कब होती है और कार्रवाई की गाज किस-किस पर गिरती है।

नोएडा में गूंजेगा जय श्री जगन्नाथ, रथ यात्रा की तैयारियां जोरों पर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा! राजधानी दिल्ली एनसीआर के सेक्टर 121 नोएडा मे स्थित श्री रत्न क्षेत्र भगवान जगन्नाथ मंदिर में 25 जुलाई को सुना वेश तथा 27 जुलाई को नीलाद्रि बीजे का आयोजन वैदिक परंपराओं एवं धार्मिक विधि-विधान के अनुसार

आयोजित होने वाले वार्षिक रथ यात्रा महोत्सव की तैयारियां जोर शोर से चल रही हैं। इस वर्ष रथ यात्रा का 17वां भव्य सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महोत्सव आयोजित किया जाएगा, जिसमें करीब पचास हज़ार श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। श्री जगन्नाथ समिति के तत्वावधान में आयोजित होने वाले इस महोत्सव में दिल्ली एवं एनसीआर एवं ओडिया तथा गैर-ओड़िया के गणमान्य नागरिक शामिल होकर भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा के दर्शन पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। समिति के अध्यक्ष प्रमोद बहल ने बताया कि रथ यात्रा के सफल एवं सुचारु आयोजन के लिए व्यापक और आधुनिक व्यवस्थाएं की गई हैं। मंदिर परिसर का आकर्षक रंग-रोगन कर उसे भव्य एवं नवीन स्वरूप प्रदान किया जा रहा है, ताकि श्रद्धालुओं को उत्सव का दिव्य वातावरण मिल सके। उन्होंने बताया कि उत्सव की शुरुआत 29 जून को देव स्नाने पूर्णिमा के साथ होगी। इसके बाद 14 जुलाई को नेत्रोत्सव एवं नवयौवन दर्शन, 16 जुलाई को रथ यात्रा दोपहर 3:30 श्री जगन्नाथ मंदिर सेक्टर 121 से प्रारंभ होकर बाबा बालक नाथ मंदिर सेक्टर 71 पहुंचेगी। 24 जुलाई को बहुदा यात्रा, किया जाएगा। प्रमोद बहल ने बताया कि भगवान के रथ का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। 18 फीट ऊचे एवं 6 पहियों वाले रथ का निर्माण अंतिम चरण में है। रथ यात्रा के दौरान सुरक्षा, शांति एवं अनुशासन बनाए रखने के लिए श्री जगन्नाथ समिति की पूरी कार्यकारिणी के साथ लगभग 500 स्वयंसेवकों की तैनाती की गई है। ग्रेट पोस्ट न्यूज़ और आरम्भ टीवी रथ यात्रा के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष दीपक सिंघल मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में शामिल होंगे तथा भगवान जगन्नाथ की पारंपरिक 'छेरा पहरा' की रस्म अदा करेंगे। इस वर्ष के रथ यात्रा महोत्सव का विशेष आकर्षण रथ यात्रा महोत्सव' के अंतर्गत आयोजित होने वाला सांस्कृतिक समारोह होगा। मंदिर प्रबंधन समिति ने श्रद्धालुओं से रथ यात्रा महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने की अपील की है। आयोजन समिति का कहना है कि धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समरसता का यह महापर्व हर वर्ष की तरह इस बार भी पूरे श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाएगा।

खेत में पानी लगाते समय करंट की चपेट में आए पिता-पुत्र की मौत, परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) बारा/प्रयागराज। थाना बारा क्षेत्र के हरदी गांव में शनिवार सुबह बड़ा हादसा हो गया। खेत में ट्यूबवेल से पानी लगाते समय करंट लगने से पिता-पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई। घटना से पूरे गांव में कोहराम मच गया। पुलिस को दी गई तहरीर के अनुसार, 28 जून 2026 को सुबह करीब 6:30 बजे हरदी निवासी विनोद कुमार बिन्द उम्र 61 वर्ष अपने बड़े बेटे धनु कुमार बिन्द उम्र 35 वर्ष के साथ खेत में पानी लगा रहे थे। इसी दौरान अचानक बिजली का करंट लगने से दोनों की मौत हो गई। मृतक के छोटे बेटे रवि कुमार ने थाना बारा में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। इंस्पेक्टर संजय कुमार राय ने बताया कि आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है। परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़ः- मृतक विनोद कुमार के परिवार पर पहले से ही दुखों का साया था। उनकी पत्नी का पहले ही देहांत हो चुका है। विनोद के दो बेटे और तीन बेटियां थीं। बड़े बेटे धनु कुमार, जिनकी मौत हो गई, उनकी शादी हो चुकी थी। इसके अलावा दो बेटियों की भी शादी हो चुकी है। अब घर में एक बेटा और एक अविवाहित बेटी बची हैं। पिता-पुत्र की एक साथ मौत से परिवार पूरी तरह बेसहारा हो गया है। ग्रामीणों ने प्रशासन से पीड़ित परिवार को आर्थिक मदद देने की मांग की है।

राष्ट्रीय सोशल इम्पैक्ट अवार्ड से सम्मानित हुए प्रतापगढ़ के सचिन शर्मा, जिले का बढ़ाया मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ/प्रतापगढ़। रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट सामाजिक योगदान के सचिन शर्मा ने प्रतापगढ़ में अनेक सफल रक्तदान शिविर आयोजित कर सैकड़ों जरूरतमंद मरीजों को

लिए प्रतापगढ़ जनपद के गोबरी निवासी समाजसेवी सचिन शर्मा जिला अध्यक्ष महापदमनंद वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन (एमडब्ल्यूओ) प्रतापगढ़ रविवार, 28 जून 2026 को लखनऊ में आयोजित 'संवेदना-2 : राष्ट्रीय सामाजिक प्रभाव पुरस्कार समारोह' में प्रतिष्ठित नेशनल सोशल इम्पैक्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह समारोह टीम निफा उत्तर प्रदेश एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ऑफ एक्सीलेंस (इंग्लैंड) के संयुक्त तत्वावधान में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार (लखनऊ)में आयोजित हुआ। समय पर रक्त उपलब्ध कराने तथा युवाओं को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस अवसर पर निफा उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप कुमार दुबे ने कहा कि, 'आप सभी का योगदान समाज में आशा जगाता है और आपकी करुणा वास्तविक परिवर्तन लाती है।' उन्होंने अधिक से अधिक लोगों से स्वैच्छिक रक्तदान अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। सचिन को मिले इस राष्ट्रीय सम्मान से जनपद का गौरव बढ़ा है तथा युवाओं में रक्तदान के प्रति नई प्रेरणा और सकारात्मक संदेश पहुंचा है।

नागरिक सुविधा दिवस का छः माह का रोस्टर जारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने बताया है कि आयुक्त महोदय, लखनऊ मण्डल लखनऊ के कार्यालय आदेशानुसार लखनऊ मण्डल के जनपदों में नगर पालिका परिषद की सीमा क्षेत्रान्तर्गत रहने वाले आम नागरिकों की दैनिक जीवन से जुड़ी मूलभूत सुविधाओं जैसे स्ट्रीट लाइट, रोड/नाली निर्माण, जलापूर्ति, सीवरेज, ट्रैफिक, अतिक्रमण, नालियों में साफ-सफाई की समस्या, आवासित स्थलों में जलभराव, हाउस टैक्स,म्यूटेशन, जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्र आदि विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु प्रत्येक माह के अन्तिम मंगलवार को नागरिक सुविधा दिवस आयोजित करने के निर्देश हैं। जिलाधिकारी ने आयुक्त महोदय, लखनऊ मण्डल लखनऊ द्वारा दिये गये निर्देश के क्रम में नागरिक सुविधा दिवस के आयोजन के लिए वर्तमान कैलेंडर वर्ष 2026 के प्रत्येक माह के अन्तिम मंगलवार हेतु नगर पालिका परिषद रायबरेली का (जुलाई से दिसम्बर 2026 तक) छः माह का रोस्टर निर्धारित किया गया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सेल के अत्याधुनिक सोलर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट का किया शिलान्यास एवं भूमि पूजन

8200 करोड़ रूपये के निवेश से स्थापित होगा अत्याधुनिक सोलर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट,5 गीगावाट सोलर सेल और 5 गीगावाट सोलर मॉड्यूल निर्माण क्षमता वाला संयंत्र बनेगा उत्तर प्रदेश में ग्रीन एनर्जी का नया केंद्र, 20 हजार से अधिक लोगों को मिलेगा रोजगार,निवेशकों को उत्तर प्रदेश में मिल रही बेहतर सुविधाएं और सुरक्षित वातावरण,उत्तर प्रदेश नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा आगे,प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के संकल्प को मिलेगी नई गति-मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ,

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास को नई ऊंचाई प्रदान करने और प्रदेश को ग्रीन एनर्जी एवं सोलर मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में शनिवार को एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया गया। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण क्षेत्र के सेक्टर-8 में 8200 करोड़ रूपये के निवेश से स्थापित होने वाले सेल के सोलर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट का भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया। 200 एकड़ क्षेत्रफल में विकसित होने वाला यह अत्याधुनिक संयंत्र 5 गीगावाट सोलर सेल एवं 5 गीगावाट सोलर मॉड्यूल निर्माण क्षमता से युक्त होगा। इस परियोजना से प्रदेश में लगभग 5000 प्रत्यक्ष एवं 15000 अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित होंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत आज विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले 12 वर्षों में देश ने विकास का ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया है, जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को भी प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया ऊर्जा संकट की चुनौतियों से जूझ रही है। ऐसे समय में भारत ने दूरदर्शी सोच के साथ नवीकरणीय ऊर्जा और ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देकर ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रभावी कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में इंटरनेशनल सोलर एलायंस जैसे प्रयासों के माध्यम से भारत ने दुनिया को स्वच्छ ऊर्जा का मार्ग दिखाया है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में देश तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के माध्यम से उत्तर प्रदेश में 6 लाख से अधिक परिवार सोलर पैनल लगाकर ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इससे लोगों के बिजली खर्च में कमी आई है और प्रदेश में सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा मिला है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से कार्य कर रही है। प्रदेश का लक्ष्य अगले दो वर्षों में 2000 मेगावाट तक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता विकसित करना है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश 6000 मेगावाट से अधिक बिजली नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त कर रहा है। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा के साथ-साथ पराली से सीबीजी, सीएनजी और इथेनॉल उत्पादन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश आज देश में सर्वाधिक इथेनॉल उत्पादन करने वाला राज्य बन चुका है। इथेनॉल ब्लेंडिंग नीति के प्रभावी क्रियान्वयन से चीनी उद्योग को मजबूती मिली है और किसानों की आय बढ़ी है। पिछले 9 वर्षों में प्रदेश सरकार ने गन्ना किसानों को 3.22 लाख करोड़ रूपये से अधिक का भुगतान किया है। उन्होंने कहा कि पराली का उपयोग ऊर्जा उत्पादन में करके किसानों की अतिरिक्त आय बढ़ाने और प्रदूषण कम करने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जेवर क्षेत्र आज विकास की नई कहानी लिख रहा है। कुछ वर्ष पूर्व तक जिस क्षेत्र की पहचान पिछड़ेपन और समस्याओं से थी, वही आज देश के सबसे महत्वपूर्ण विकास केंद्रों में शामिल हो रहा है। जेवर में बन रहा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग यूनिट, फिल्म सिटी, अपैरल पार्क, विश्वविद्यालय और लॉजिस्टिक हब जैसी परियोजनाएं क्षेत्र के विकास को नई गति प्रदान कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सेल सोलर इंडस्ट्रीज लिमिटेड का यह निवेश जेवर को सोलर सेल मैन्युफैक्चरिंग के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करेगा। यह परियोजना प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को मजबूती प्रदान करेगी और आने वाले समय में भारत की सोलर तकनीक एवं निर्यात क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुख्यमंत्री ने सेल सोलर इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरमैन जसवीर सिंह , सुखबीर सिंह एवं उनकी पूरी टीम को उत्तर प्रदेश में निवेश के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार प्रत्येक निवेशक को सम्मान, सुरक्षा और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में निवेश को बढ़ावा देने के लिए 36 सेक्टरल नीतियां लागू की गई हैं। प्रदेश में 75 हजार एकड़ से अधिक का लैंड बैंक, बेहतर एक्सप्रेसवे नेटवर्क, मजबूत रेलवे व्यवस्था और उत्कृष्ट सड़क कनेक्टिविटी उपलब्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार का लक्ष्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के विजन को साकार करना, आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को आगे बढ़ाना, युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना और किसानों के जीवन में खुशहाली लाना है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सेल सोलर इंडस्ट्रीज लिमिटेड समयबद्ध तरीके से इस परियोजना को पूर्ण कर उत्तर प्रदेश को सोलर सेल मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में देश का प्रमुख केंद्र बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार में वित्त एवं संसदीय कार्य विभाग के मंत्री सुरेश खन्ना, औद्योगिक विकास मंत्री उत्तर प्रदेश नंद गोपाल गुप्ता , विधायक जेवर धीरेंद्र सिंह, अन्य जनप्रतिन निधि गण तथा सेल मैन्युफैक्चरर इंडस्ट्री के सीएमडी जसबीर सिंह, एमडी सुखबीर सिंह, सीओ लक्षित बावला, मुख्य कार्यपालक अधिकारी यमुना विकास प्राधिकरण राकेश कुमार सिंह सहित शासन प्रशासन प्राधिकरण एवं पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी का उपस्थित रहे।

क्लिक अभियान 2.0 के तहत मैहर में साइबर जन जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर किया गया रवाना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश एवं पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना के नेतृत्व में पूरे मध्य प्रदेश में संचालित 'सेफ क्लिक अभियान 2.0' के अंतर्गत आज जिला मैहर में साइबर अपराधों के प्रति आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से साइबर जन जागरूकता रथ को रवाना किया गया। माननीय विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी की गरिमामयी उपस्थिति में आज पुलिस अधीक्षक श्री अवधेश प्रताप सिंह (भा.पु.से.) द्वारा साइबर जन जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर जिले के जनप्रतिनिधिगण, पुलिस अधिकारी/अधिकारी,मीडिया प्रतिनिधि तथा आमजन उपस्थित रहे। साइबर जन जागरूकता रथ जिले के विभिन्न शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण कर नागरिकों को डिजिटल अरेस्ट, फर्जी कॉल, ऑनलाइन निवेश ठगी, ओटीपी एवं बैंकिंग फ्रॉड, सोशल मीडिया फ्रॉड, फर्जी लिंक, एपीके फाइल, क्युआर कोड स्कैम तथा अन्य साइबर अपराधों से बचाव के संबंध में जागरूक करेगा। अभियान के दौरान लोगों को सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाने तथा साइबर अपराधियों की नई-नई कार्यप्रणालियों से सतर्क रहने

के लिए प्रेरित किया जाएगा। इस अवसर पर माननीय विधायक श्री श्रीकांत चतुर्वेदी ने उपस्थित नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि किसी भी प्रकार के लालच, झूठे प्रलोभन अथवा फर्जी कॉल के झांसे में न आएं। यदि किसी भी प्रकार की संदिग्ध कॉल, संदेश या ऑनलाइन ठगी का प्रयास हो, तो घबराएं नहीं बल्कि तत्काल अपने नजदीकी पुलिस थाने से संपर्क करें अथवा साइबर हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराएं। उन्होंने सभी नागरिकों से स्वयं जागरूक रहने और अपने परिवार एवं परिचितों को भी साइबर अपराधों से बचाव के प्रति जागरूक करने का आग्रह किया। पुलिस अधीक्षक श्री अवधेश प्रताप सिंह (भा.पु.से.) ने भी आमजन से अपील की है कि किसी भी अज्ञात लिंक पर क्लिक न करें, अपनी व्यक्तिगत अथवा बैंकिंग जानकारी किसी के साथ साझा न करें। साथ ही उपस्थित नागरिकों को विशेष रूप से डिजिटल अरेस्ट जैसी साइबर ठगी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यदि किसी भी प्रकार की साइबर ठगी का शिकार हों या ठगी का प्रयास किया जाए, तो बिना विलंब साइबर हेल्पलाइन 1930 पर कॉल करें। त्वरित शिकायत करने से ठगी गई राशि को वापस प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाती है। 'सेफ क्लिक अभियान 2.0' के माध्यम से मैहर पुलिस साइबर सुरक्षा के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने के लिए निरंतर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रही है। अभियान का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को साइबर अपराधों के प्रति जागरूक बनाकर सुरक्षित एवं सशक्त डिजिटल समाज का निर्माण करना है। मैहर पुलिस सभी नागरिकों से अपील करती है कि स्वयं जागरूक बनें, दूसरों को भी जागरूक करें तथा किसी भी साइबर अपराध की सूचना तत्काल साइबर हेल्पलाइन 1930 अथवा राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल www.cybercrime.gov.in पर दें और इस जन-जागरूकता अभियान में सहभागी बनें।

बारात से लौट रहे तीन लोगों से की गई मारपीट, गालियां देने और नकदी लूटने का आरोप,जांच जारी

सोनभद्र। सोनभद्र में बारात से लौट रहे तीन लोगों के साथ मारपीट करके लूट की गई। पीड़ित पक्ष ने पुलिस को तहरीर देकर आरोप लगाया है कि कुछ लोगों ने रास्ते में रोककर लाठी-डंडों से हमला किया, जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया और नकदी छीनकर फरार हो गए। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।दरअसल, जुगैल थाना क्षेत्र के टोला उजरा निवासी दुर्गालाल ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि वह अपने छोटे भाई राजकुमार की बारात से पिपरा गांव से लौट रहे थे। उन्होंने बताया कि द्वार पूजा की रस्म के लिए घर में रखे रुपये लेने जा रहे थे। आरोप है कि पिपरा गांव से कुछ दूरी पहले तीन बाइकों पर सवार करीब नौ लोगों ने उन्हें रोक लिया। तहरीर में कुछ लोगों को नामजद करते हुए आरोप लगाया गया है कि हमलावरों ने लाठी-डंडों, लात-घूंसों से मारपीट की। इस दौरान जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया गया और उनके पास मौजूद नकदी छीन ली गई। बीच-बचाव करने पहुंचे परिजनों के साथ भी मारपीट की गई। आरोप है कि जाते समय हमलावर जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। घटना की सूचना मिलने पर जुगैल पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, चोपन भेजा। वहां उनका उपचार कराने के साथ मेडिकल परीक्षण कराया गया। अस्पताल में तैनात चिकित्सक डॉ. अभय सिंह ने बताया कि घायलों के सिर और शरीर के अन्य हिस्सों पर चोटें आई थीं। सभी का उपचार कर मेडिकल परीक्षण पूरा कर लिया गया है। जुगैल पुलिस का कहना है कि पीड़ित पक्ष से तहरीर प्राप्त हो गई है। मामले की जांच की जा रही है। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उनके आधार पर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

10 साल पुराने जातिसूचक गाली देने और फिरौती के मामले में चार दोषियों को 3-3 साल की जेल

सोनभद्र। सोनभद्र में विशेष न्यायाधीश एससी/एसटी एक्ट गोविंद मोहन की अदालत ने करीब साढ़े 10 वर्ष पुराने फिरौती मांगने और जातिसूचक गाली देने के मामले में सोमवार को चार दोषियों को 3-3 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई। अदालत ने दो दोषियों पर 16-16 हजार रुपये तथा अन्य दो दोषियों पर 21-21 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया है। अर्थदंड अदा न करने पर तीन-तीन माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा। जेल में बिताई गई अवधि सजा में समायोजित की जाएगी। अभियोजन पक्ष के अनुसार, मामला शाहगंज थाना क्षेत्र के आशाताली गांव निवासी दिनेश कुमार पुत्र प्रेम की तहरीर पर दर्ज हुआ था। दिनेश ने 13 नवंबर 2015 को पुलिस को दी गई शिकायत में बताया था कि वह अनुसूचित जाति से हैं और उनके पिता जमीन की खरीद-फरोख्त का कार्य करते हैं। शिकायत के अनुसार, 11 नवंबर 2015 को उनके पिता किसी आवश्यक कार्य से बाहर गए थे। अगले दिन बाला उर्फ शंकर सरन ने दूसरे व्यक्ति के मोबाइल से फोन कर बताया कि उनके पिता शक्तेशगढ़, मिर्जापुर में रुके हुए हैं। इसके बाद दो मोबाइल नंबर देकर उन पर संपर्क करने को कहा और चेतावनी दी कि ऐसा नहीं करने पर उनके पिता की हत्या कर दी जाएगी। जब दिनेश के चाचा ने दिए गए नंबरों पर संपर्क किया तो आरोपियों ने कथित रूप से जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए 80 हजार रुपये की फिरौती मांगी। आरोप था कि रकम न देने पर उनके पिता की हत्या कर दी जाएगी। साथ ही यह भी कहा गया कि दिनेश के पिता बदमाशों के कब्जे में हैं और बाला भी उनके साथ मिला हुआ है। विवेचना के दौरान बाला उर्फ शंकर सरन के अलावा जोखन हरिजन, धर्मेंद्र पटेल और दिलीप कुमार पटेल का नाम भी प्रकाश में आया। पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर पुलिस ने चारों आरोपियों के विरुद्ध न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों की दलीलों, गवाहों के बयान और उपलब्ध साक्ष्यों का अवलोकन करने के बाद चारों आरोपियों को दोषी ठहराया। न्यायालय ने बाला उर्फ शंकर सरन, जोखन हरिजन, धर्मेंद्र पटेल तथा दिलीप कुमार पटेल को 3-3 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई। साथ ही बाला और जोखन पर 16-16 हजार रुपये तथा धर्मेंद्र और दिलीप पर 21-21 हजार रुपये का अर्थदंड लगाया। अर्थदंड जमा न करने की स्थिति में तीन-तीन माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

सड़क दुर्घटना में एक की मौत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद के रॉबर्ट्सगंज कोतवाली अंतर्गत सुकृत पुलिस चौकी क्षेत्र के मधुपुर में नौगढ़ रोड पर शुक्रवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे में एक अधेड़ की मौत हो गई, जबकि एक महिला घायल हो गई। जानकारी के अनुसार, कुतलुपुर निवासी गोविंद चौहान (लगभग 55 वर्ष) नौगढ़ रोड से मधुपुर की ओर बाइक से जा रहे थे। कोइलहिया बस्ती के समीप उनकी बाइक ने रेनू पत्नी दिनेश को टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गईं।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, टक्कर के बाद लोगों के आक्रोश से बचने के लिए गोविंद चौहान तेज रफ्तार से बाइक लेकर मधुपुर की ओर भागने लगे। इसी दौरान मुख्य सड़क पर लगभग 500 मीटर आगे सामने से आ रही एक पिकअप से उनकी बाइक अनियंत्रित होकर टकरा गई। हादसे में वह सड़क पर गिर पड़े और उनके सिर में गंभीर चोट लग गई, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही परिजन, एम्बुलेंस तथा सुकृत पुलिस मौके पर पहुंची। घायल महिला को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मधुपुर में भर्ती कराया गया। वहीं गोविंद चौहान को भी अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने आवश्यक पंचनामा की कार्रवाई पूरी कर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है।

किशोर जामुन तोड़ने समय पेड़ से गिरा,डाल टूटने से आई गंभीर चोटें, जिला मेडिकल कॉलेज रेफर

सोनभद्र। विंढमगंज कोतवाली क्षेत्र के जोरूखाड़ गांव में सोमवार को जामुन तोड़ने के दौरान एक 17 वर्षीय किशोर पेड़ से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। किशोर जामुन तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ा था, तभी अचानक एक डाल टूट गई और वह कई फीट नीचे जमीन पर आ गिरा। उसे गंभीर चोटें आईं।घटनास्थल पर मौजूद उसके पड़ोसी युवक ने तत्काल घायल किशोर को एक निजी वाहन से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दुद्धी पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी गंभीर हालत को देखते हुए उसे जिला मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।घायल किशोर की पहचान फुलवार निवासी सत्यम यादव (17) पुत्र दयानंद यादव के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि सत्यम अपने पड़ोसी युवक के साथ जोरूखाड़ गांव में जामुन तोड़ने गया था। दोनों पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ रहे थे। इसी दौरान सत्यम जिस डाल पर खड़ा था, वह अचानक टूट गई, जिससे वह सीधे जमीन पर गिर गया। इस हादसे में उसके सिर और शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोटें आईं। घटना के बाद सत्यम के साथ मौजूद युवक ने स्थानीय लोगों की सहायता से उसे उठाया और तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दुद्धी पहुंचाया। अस्पताल में चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद सत्यम की हालत गंभीर बताई और उसे बेहतर इलाज के लिए जिला मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। हादसे की सूचना मिलने पर अस्पताल पहुंचे परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था। चिकित्सकों ने उन्हें बताया कि किशोर को गंभीर चोटें आई हैं, जिसके कारण उसे बेहतर चिकित्सा सुविधा के लिए रेफर किया गया है। बता दे कि बरसात के मौसम में बच्चे और किशोर अक्सर जामुन, आम जैसे फल तोड़ने के लिए ऊंचे पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। जबकि कमजोर या सूखी डाल कभी भी टूट सकती है, जिससे इस तरह के हादसे हो सकते हैं।

अनपरा-रेणुकूट मार्ग पर राख लदा ट्रेलर पलटा

सोनभद्र। अनपरा-रेणुकूट राज्य मार्ग पर रविवार देर रात बैरपान केएनआई पेट्रोल पंप के समीप राख (ऐश) से लदा एक ट्रेलर अनियंत्रित होकर पलट गया। इस हादसे के कारण मार्ग पर घंटों तक यातायात ठप रहा और वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। हालांकि, ट्रेलर चालक सुरक्षित बच गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रेलर अनपरा से रेणुकूट की ओर जा रहा था। बैरपान केएनआई पेट्रोल पंप के पास अचानक चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिससे ट्रेलर सड़क पर पलट गया। ट्रेलर के पलटते ही उसमें लदी राख सड़क पर फैल गई और मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध हो गया। घटना के बाद अनपरा-रेणुकूट राज्य मार्ग पर दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। देखते ही देखते जाम कई किलोमीटर तक फैल गया। इस जाम में रोडवेज बसें, ट्रक, ट्रेलर, निजी वाहन और दोपहिया वाहन घंटों फंसे रहे। एक आपातकालीन एंबुलेंस भी जाम में फंस गई, जिससे मरीज और उनके परिजनों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। सूचना मिलते ही अनपरा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और यातायात व्यवस्था संभालने में जुट गई। पुलिसकर्मियों को सड़क पर पलटे हुए भारी ट्रेलर के कारण यातायात सामान्य करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। ट्रेलर को हटाने के लिए क्रेन बुलाई गई। पुलिस और स्थानीय लोगों के सहयोग से कई घंटों की कड़ी मेहनत के बाद ट्रेलर को हटाने की प्रक्रिया शुरू की जा सकी।

अज्ञात महिला का शव मिला,पुलिस शिनाख्त में जुटी

सोनभद्र। सोनभद्र के पन्नूगंज थाना क्षेत्र में सोमवार को एक अज्ञात महिला का शव मिलने से हड़कंप मच गया। परसिया गांव के पास सड़क किनारे झाड़ियों में शव बरामद हुआ। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। ग्रामीणों ने सड़क किनारे झाड़ियों में शव देखा, जिसके बाद मौके पर भीड़ जमा हो गई। पन्नूगंज पुलिस ने शव को कब्जे में लिया और उसकी शिनाख्त का प्रयास किया। हालांकि, महिला की पहचान नहीं हो पाई। मृतक महिला की उम्र लगभग 30 वर्ष बताई जा रही है। पन्नूगंज थाना प्रभारी माधव सिंह ने बताया कि उन्हें दोपहर करीब तीन बजे महिला के शव पड़े होने की सूचना मिली थी। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर आसपास के ग्रामीणों से भी शिनाख्त कराने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। शव को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी हाउस भेज दिया गया है। पुलिस मामले की आगे की जांच कर रही है।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

भारत 16 टी-20 सीरीज जीतने के बाद हारा, अभिषेक छठी बार ज़ीरो पर आउट, श्रेयस पहले 2 मैच हारने वाले दूसरे भारतीय कप्तान

बेलफास्ट। आयरलैंड ने दूसरे टी-20 मैच में भारत को

एक रन से हराकर सीरीज में 2-0 से क्लीन स्वीप किया। भारतीय टीम 16 टी-20 सीरीज जीतने वेऱ बाद हारी है। बेलफास्ट में मिली हार के साथ श्रेयस पहले दो टी-20 मैच हारने वाले दूसरे भारतीय कप्तान बने। उनसे पहले ऋषभ पंत ने अपनी कप्तानी में शुरुआती दो मैच गंवाए थे। IND Vs IRE मैच के टॉप रिकॉर्ड्स-मोमेंट्सः-1. भारत 3 साल बाद टी-20 सीरीज हारा- यह भारत की 2023 से 2026 के बीच टी-20 सीरीज में पहली हार है। टीम लगातार 16 सीरीज के बाद हारी है। इससे पहले पाकिस्तान 2016 से 2018 के बीच लगातार 11 टी-20 सीरीज जीतने के बाद हारी थी। 2. श्रेयस बतौर कप्तान लगातार दूसरा मैच हारे-श्रेयस अय्यर बतौर कप्तान अपने शुरुआती दोनों टी-20 इंटरनेशनल मैच हारने वाले भारत वेऱ दूसरे कप्तान बन गए हैं। उनसे पहले ऋषभ पंत के नाम यह अनचाहा रिकॉर्ड दर्ज था। पंत भारत के पहले ऐसे कप्तान थे, जिन्हें कप्तानी के अपने शुरुआती दोनों टी-20 मैचों में हार का सामना करना पड़ा था। 3. भारत टी-20 में 1 रन से तीसरी बार हारा- भारत को टी-20 इंटरनेशनल में तीसरी बार एक रन से हार मिली है। इससे पहले टीम 2012 में न्यूजीलैंड से और 2016 में वेस्टइंडीज से एक रन से हारी थी। 4. प्रिंस पहली गेंद पर सिक्स लगाने वाले तीसरे भारतीय-प्रिंस ने मैच की आखिर गेंद पर छक्का लगाया। वे टी-20 इंटरनेशनल में अपनी पहली गेंद पर सिक्स लगाने वाले तीसरे भारतीय बन गए हैं। सबसे पहले सूर्यकुमार यादव ने 2021 में इंग्लैंड वेऱ जोफ्रा आर्चर वेऱ खिलाफ छक्का लगाया था। उनके बाद रमनदीप सिंह ने 2024 में साउथ अफ्रीका वेऱ एंडिले सिमेलाने के खिलाफ सिक्स लगाया था। 5. अभिषेक एक साल में 6 बार शून्य पर आउट हुए-अभिषेक शर्मा टी-20 में एक साल में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। वे इस साल छठी बार शून्य पर आउट हुए। इस मामले में पाकिस्तान के सईम अयूब पहले स्थान पर हैं। वे 2025 में 7 बार शून्य पर आउट हुए थे।

6. टी-20 में तीसरी बार भारतीय ओपनर्स शून्य पर आउट-संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा दोनों शून्य पर आउट हुए। यह तीसरी बार है, जब टी-20 में भारत के दोनों ओपनर्स शून्य पर आउट हुए। सबसे पहले 2016 में रोहित शर्मा और अजिंक्य रहाणे की जोड़ी पाकिस्तान के खिलाफ शून्य पर आउट हुए थे। शुभमन गिल और यशस्वी जायसवाल की जोड़ी भी इस लिस्ट में है। 7. सैमसन टी-20 में दूसरी बार पारी की पहली बॉल पर आउट-सैमसन सबसे ज्यादा बार टी-20 पारी की पहली गेंद पर आउट होने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। वे 2 बार पहली गेंद पर आउट हो चुके हैं। उनसे पहले केएल राहुल, पृथ्वी शॉ, रोहित शर्मा और अभिषेक शर्मा 1-1 बार टी-20 पारी की पहली बॉल पर आउट हो चुके हैं। 8. हैरी टेक्टर ने अपने 100वें टी-20 मैच में अर्धशतक लगाया- आयरलैंड के हैरी टेक्टर ने 53 रन बनाए।

वे 100वें टी-20 मैच में 50 या उससे अधिक स्कोर बनाने वाले दुनिया के 8वें बल्लेबाज बन गए हैं। इस खास लिस्ट में ग्लेन मैक्सवेल, रोहित शर्मा, जोस बटलर जैसे दिग्गजों के नाम शामिल हैं। 9. अर्शदीप सिंह के पहले ओवर में 2 छक्के लगे- अर्शदीप सिंह के पहले ओवर में आयरिस बैटर रॉस अडायर ने लगातार 2 सिक्स लगाए। वे टी-20 में पारी के पहले ओवर में 2 छक्के खाने वाले भारत के तीसरे गेंदबाज बन गए। उनसे पहले 2016 में रविचंद्रन अश्विन और 2020 में शार्दुल ठाकुर के पहले ओवर में 2 छक्के लगे थे। 10. हैरी टेक्टर 100 टी-20 खेलने वाले यंगेस्ट आयरिश प्लेयर-हैरी टेक्टर ने 100 टी-20 मैच खेला। वे 100 टी-20 मैच खेलने वाले आयरलैंड के सबसे यंगेस्ट और दुनिया के तीसरे सबसे युवा खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने 26 साल 204 दिन की उम्र में यह उपलब्धि हासिल की। पाकिस्तान के शादाब खान 25 साल 239 दिन की उम्र के साथ पहले स्थान पर हैं। यहां से टॉप-3 मोमेंट्सः- 1. प्रिंस यादव ने पहला टी-20 इंटरनेशनल विकेट लिया- आयरलैंड की पारी के 7वें ओवर में प्रिंस यादव ने टी-20 करियर का पहला विकेट लिया। ओवर की तीसरी गेंद पर लॉर्कन टकर बड़ा शॉट लगाने गए। लेकिन, गेंद बल्ले का किनारा लेकर गेंद विकेटकीपर ईशान किशन के हाथों में चली गई।2. शिवम दुबे ने लगातार 2 गेंदों पर दो विकेट लिए-15वें ओवर में शिवम दुबे ने लगातार 2 गेंद पर विकेट चटकाए।

बेंजामिन कैलिट्ज ने पहले दो छक्के लगाए। इसके बाद ओवर की चौथी गेंद पर तिलक वर्मा को कैच दे बैठे। इसकी अगली ही गेंद पर गैरेथ डेलानी बिना खाता खोले बोल्ड हो गए। 3. बारिश के कारण 2 बार खेल रुका:-बारिश की वजह से खेल 2 बार रोका गया। पहले आयरलैंड की पारी के 18वें ओवर में बारिश ने खलल डाली। इसकी वजह से 5 मिनट तक खेल रुका। इसके बाद दूसरी पारी में 8वें ओवर के बाद बारिश की वजह से खेल दोबारा रोका गया। इस बार करीब 20 मिनट के बाद खेल दोबारा शुरु हो पाया।

दीप्ति सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली महिला क्रिकेटर, कोहली-अनुष्का मैच देखने पहुंचे

लंदन। ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 6 विकेट से हराकर विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप से बाहर कर दिया। लॉर्ड्स में स्पिनर दीप्ति शर्मा महिला इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली गेंदबाज बनीं। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने भारत की ओर से वर्ल्ड कप की सबसे तेज फिफ्टी लगाई। स्टेडियम में विराट कोहली व अनुष्का शर्मा भारतीय टीम का हौसला बढ़ाते नजर आए। मैच में ऑस्ट्रेलिया ने वर्ल्ड कप इतिहास का सबसे बड़ा रन चेज भी पूरा किया। टीम ने 171 रन का टारगेट 19 ओवर में हासिल कर लिया। 1. विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप का सबसे बड़ा रन चेज-

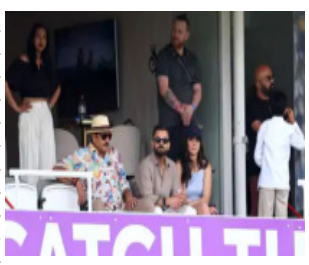

ऑस्ट्रेलिया ने 171 रन का टारगेट हासिल कर विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप का सबसे बड़ा रन चेज किया। इससे पहले सबसे बड़ा चेज 164 रन का था। यह इंग्लैंड ने 2009 के सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ किया था। वर्ल्ड कप में अब तक 150 प्लस रन के 8 सफल चेज में से 6 इसी एडीशन में देखने को मिले हैं। वहीं, यह ऑस्ट्रेलिया का महिला टी-20 इंटरनेशनल में दूसरा सबसे बड़ा रन चेज भी रहा। 2. दीप्ति सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली महिला क्रिकेटर बनीं-दीप्ति शर्मा ने महिला इंटरनेशनल क्रिकेट में नया इतिहास रच दिया। उन्होंने झूलन गोस्वामी को पीछे छोड़ते हुए सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड अपने नाम किया। उनके तीनों फॉर्मेट मिलाकर 356 इंटरनेशनल विकेट हो गए हैं, जबकि झूलन गोस्वामी ने अपने करियर में 355 विकेट लिए थे। दीप्ति ने टेस्ट में 22, वनडे में 166 और टी-20 इंटरनेशनल में 168 विकेट हासिल किए हैं। 3. चरणी एक एडिशन की दूसरी हाईएस्ट विकेट टेकर-भारतीय स्पिनर श्री चरणी ने इस टूर्नामेंट में अपना 14वां विकेट लिया। वे महिला टी-20 वर्ल्ड कप के एक एडिशन में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली दूसरी गेंदबाज बन गई हैं। किसी एक एडिशन में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड न्यूजीलैंड की अमेलिया केर के नाम है। उन्होंने 2024 में 15 विकेट लिए थे।

बच्चे को कोचिंग में एडमिशन दिलाना है,पहले कोचिंग से पूछें कुछ सवाल, हर पेरेंट के लिए कंपलसरी सेफ्टी चेकलिस्ट

नयी दिल्ली। सभी माता-पिता ये चाहते हैं कि उनके बच्चों को पढ़ाई-लिखाई के अच्छे मौके मिलें। अच्छी कोचिंग मिले, ताकि वे बेहतर करियर बना सकें। इसलिए अच्छी कोचिंग ढूंढते हुए पेरेंट्स सिर्फ ये देखते हैं कि कोचिंग का पासिंग और सिलेक्शन रिकॉर्ड कैसा है। लेकिन इस बीच एक बेहद जरूरी सवाल पीछे छूट जाता है। वो ये कि 'जिस कोचिंग बिल्डिंग में बच्चा रोज कई घंटे बिताएगा, वह कितनी सुरक्षित है?' हाल ही में लखनऊ में एक कोचिंग सेंटर की बिल्डिंग में आग लगने से 15 छात्रों की मौत हो गई। इससे पहले जुलाई, 2024 में दिल्ली के ओल्ड राजेंद्र नगर स्थित एक कोचिंग में पानी भरने से तीन छात्रों की जान चली गई थी। इन घटनाओं ने दिखाया कि सुरक्षा में छोटी-सी चूक भी बड़ी त्रासदी बन सकती है। खबर' में जानेंगे कि अपने बच्चों का कोचिंग में एडमिशन कराने से पहले पेरेंट्स को क्या-क्या चेक करना चाहिए। साथ ही जानेंगे कि-पेरेंट्स को कौन-से 10 सवाल जरूर पूछने चाहिए? कोचिंग का रजिस्ट्रेशन कैसे चेक कर सकते हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः रुद्र विक्रम सिंह, एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। बच्चों को कोचिंग में एडमिशन दिलाते समय सिर्फ सिलेक्शन चार्ट नहीं देखना चाहिए। अभिभावकों को फायर सेफ्टी और मेडिकल इमरजेंसी से जुड़े जरूरी सवाल भी पूछने चाहिए। कोचिंग संस्थानों के लिए बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।सवाल- अगर बच्चे को कोचिंग में एडमिशन दिलवा रहे हैं तो सबसे पहले क्या चेक करें? जवाब- कोचिंग में एडमिशन से पहले ये चीजें जरूर चेक करें- कोचिंग का रजिस्ट्रेशन चेक करें। टीचर्स की योग्यता और अनुभव देखें। एक बैच में बच्चों की संख्या जानें। पढ़ाई, टेस्ट और स्टडी मटेरियल देखें। फीस और रिफंड पॉलिसी समझें। क्लासरूम और फायर सेफ्टी चेक करें। सीसीटीवी और सुरक्षा व्यवस्था देखें। काउंसलिंग की सुविधा के बारे में जानें। पुराने छात्रों और पेरेंट्स का फीडबैक लें। सवाल- क्या सिर्फ रिजल्ट देखकर कोचिंग चुनना सही है? जवाब- नहीं। कई संस्थान सिर्फ चुनिंदा सफल छात्रों को प्रचार में दिखाते हैं, जबकि पूरी तस्वीर अलग होती है। अच्छी कोचिंग वही है, जहां ये चीजें भी बेहतर हों- पढ़ाई की क्वालिटी। बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान। सुरक्षा। सीखने का माहौल। इसलिए रिजल्ट को एक पैमाना मानें, लेकिन सिर्फ उसके आधार पर फैसला न करें। सवाल- कोचिंग चुनते समय पेरेंट्स क्या कॉमन गलतियां करते हैं? जवाब- पेरेंट्स की गलतियों का असर बच्चे की पढ़ाई, आत्मविश्वास और मेंटल हेल्थ पर पड़ता है। पेरेंट्स अक्सर ये गलतियां करते हैं- सिर्फ रिजल्ट और टॉपर्स देखकर फैसला लेना। बच्चे की रुचि और क्षमता को नजरअंदाज करना। भीड़ या दूसरे लोगों की देखा-देखी एडमिशन कराना। सुरक्षा और बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान न देना। पूरी जानकारी के बिना जल्दबाजी में एडमिशन कराना। सवाल- बच्चे को सुरक्षा, जवाबदेही और इमरजेंसी तैयारियों का अंदाजा लगा सकते हैं। कोचिंग में एडमिशन से पहले पेरेंट्स ये 10 सवाल जरूर पूछें:- कोचिंग के पास फायर एनओसी है? फायर एनओसी कब तक वैध है? इमरजेंसी एग्जिट कितने हैं? आखिरी फायर ड्रिल कब हुई? मेडिकल इमरजेंसी का प्रोटोकॉल क्या है? सीसीटीवी कितने दिन का रिकॉर्ड रखता है? टीचर्स का वेरिफिकेशन हुआ है? मेंटल हेल्थ सहायता उपलब्ध है? हॉस्टल सुरक्षा व्यवस्था क्या है? इमरजेंसी में पेरेंट्स को कैसे सूचना दी जाएगी? सवाल- क्या कोचिंग सेंटर की बिल्डिंग में फायर सेफ्टी के सारे इंतजाम हैं? जवाब- कोचिंग सेंटर की बिल्डिंग में आग जैसी आपात स्थिति से निपटने के लिए ये जरूरी इंतजाम होने चाहिए। काउंसलिंग की सुविधा के बारे में जानें। पुराने छात्रों और पेरेंट्स का फीडबैक लें। सवाल- क्या सिर्फ रिजल्ट देखकर कोचिंग चुनना सही है? जवाब- नहीं। कई संस्थान सिर्फ चुनिंदा सफल छात्रों को प्रचार में दिखाते हैं, जबकि पूरी तस्वीर अलग होती है। अच्छी कोचिंग वही है, जहां ये चीजें भी बेहतर हों- पढ़ाई की क्वालिटी। बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान। सुरक्षा। सीखने का माहौल। इसलिए रिजल्ट को एक पैमाना मानें, लेकिन सिर्फ उसके आधार पर फैसला न करें। सवाल- कोचिंग चुनते समय पेरेंट्स क्या कॉमन गलतियां करते हैं? जवाब- पेरेंट्स की गलतियों का असर बच्चे की पढ़ाई, आत्मविश्वास और मेंटल हेल्थ पर पड़ता है। पेरेंट्स अक्सर ये गलतियां करते हैं- सिर्फ रिजल्ट और टॉपर्स देखकर फैसला लेना। बच्चे की रुचि और क्षमता को नजरअंदाज करना। भीड़ या दूसरे लोगों की देखा-देखी एडमिशन कराना। सुरक्षा और बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान न देना। पूरी जानकारी के बिना जल्दबाजी में एडमिशन कराना। सवाल- बच्चे को एडमिशन दिलाने से पहले पेरेंट्स को कौन-से सवाल पूछने चाहिए? जवाब- कुछ जरूरी सवाल पूछकर आप कोचिंग की अवधि देखें। एनओसी में लिखा पता कोचिंग के पते से मिलाएं। संबंधित राज्य के फायर सर्विस/नगर निगम के ऑनलाइन पोर्टल पर एनओसी को वेरिफाई करें। अगर ऑनलाइन जानकारी उपलब्ध न हो तो फायर डिपार्टमेंट या नगर निकाय से आरटीआई के जरिए जानकारी लें। सवाल- बिल्डिंग में कितने इमरजेंसी एग्जिट हैं? कितने होने चाहिए? जवाब- इमरजेंसी एग्जिट की संख्या इमारत वेऱ आकार, ऊंचाई और उसमें मौजूद लोगों की संख्या वेऱ हिसाब से तय होती हैं। हालांकि- कम-से-कम 2 इमरजेंसी एग्जिट होने चाहिए। दोनों एग्जिट अलग-अलग दिशा में होने चाहिए। एग्जिट तक जाने का रास्ता खुला और बिना रुकावट का होना चाहिए। अगर बिल्डिंग बड़ी है या उसमें ज्यादा लोग रहते हैं तो 2 से ज्यादा एग्जिट होने चाहिए। सवाल- क्या कोचिंग में नियमित फायर ड्रिल होती है? जवाब- बच्चे को एडमिशन दिलाने से पहले पता करें कि कोचिंग में नियमित फायर ड्रिल होती है या नहीं। यह भी सुनिश्चित करें कि छात्रों और स्टाफ को इमरजेंसी सिचुएशन के लिए सेफ एग्जिट का नियमित अभ्यास कराया जाता हो। सवाल- आग लगने की स्थिति में बच्चों को निकालने की क्या व्यवस्था है? जवाब- राष्ट्रीय भवन संहिता (एनबीसी) के मुताबिक, हर संस्थान के पास सेफ एग्जिट की स्पष्ट योजना होनी चाहिए। ये चीजें जरूर चेक करें- इमरजेंसी निकासी की लिखित योजना है या नहीं। हर मंजिल पर एग्जिट रूट का मैप लगा है या नहीं। सभी छात्रों के लिए तय असेंबली प्वॉइंट है या नहीं। बच्चों और स्टाफ को नियमित मॉक ड्रिल कराई जाती है या नहीं। सवाल- बिल्डिंग में कितने फायर एक्सटिंग्विशर हैं? कितने होने चाहिए? जवाब- फायर एक्सटिंग्विशर की संख्या सभी इमारतों के लिए एक जैसी नहीं होती। यह इमारत के आकार, जरूरत, आग के रिस्क और वहां मौजूद लोगों की संख्या वेऱ आधार पर तय की जाती है। सवाल- क्या धुआं निकलने और अलार्म सिस्टम की व्यवस्था है? जवाब- एडमिशन से पहले यह जरूर पता करें कि कोचिंग में स्मोक डिटेक्टर और फायर अलार्म सिस्टम लगे हैं या नहीं। अलार्म सिस्टम आग या धुआं होने पर तुरंत अलर्ट देते हैं। इससे समय रहते इमारत खाली कराई जा सकती है और हादसे का रिस्क कम होता है। सवाल- कोचिंग में बिजली के तारों और उपकरणों की क्या स्थिति है? जवाब- कई बड़े हादसों में देखा गया है कि आग लगने की वजह खराब बिजली व्यवस्था और सुरक्षा उपकरणों की कमी थी। इसलिए एडमिशन से पहले कोचिंग में ऐसे सभी जरूरी सुरक्षा इंतजाम जरूर चेक कर लें।सवाल- एक क्लासरूम में कितने बच्चे होने चाहिए? जवाब- इसकी कोई तय सीमा नहीं है। हालांकि, कोचिंग सेंटर्स वेऱ लिए वेऱंद्र सरकार की गाइडलाइंस (2024) के मुताबिक, हर छात्र के लिए कम-से-कम 1 वर्गमीटर (1 स्क्वे मी.) जगह होनी चाहिए और छात्रों की संख्या के हिसाब से पर्याप्त इंफ्रास्ट्रक्चर होना चाहिए। सवाल- क्या कोचिंग में फर्स्ट-एड किट मौजूद है? जवाब- छोटी-मोटी चोट या मेडिकल इमरजेंसी में तुरंत प्राथमिक उपचार देना बेहद जरूरी होता है। इसके लिए पता करें कि-कोचिंग सेंटर में फर्स्ट-एड किट उपलब्ध है या नहीं।किट में सभी जरूरी सामान और दवाएं मौजूद हैं या नहीं। देखें कि उनकी एक्सपायरी डेट क्या है। स्टाफ में किसी को प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण मिला है या नहीं। सवाल- किसी छात्र की तबीयत खराब होने पर कोचिंग का प्रोटोकॉल क्या है? जवाब- शिक्षा मंत्रालय की 2024 की कोचिंग सेंटर गाइडलाइंस के मुताबिक, कोचिंग में फर्स्ट एड किट और इमरजेंसी मेडिकल हेल्प की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि जरूरत पर तुरंत प्राथमिक उपचार मिल सके। यह भी जांचें कि, मेडिकल इमरजेंसी के लिए हॉस्पिटल या एम्बुलेंस की व्यवस्था है या नहीं। सवाल- क्या कोचिंग किसी सरकारी अथॉरिटी के पास रजिस्टर्ड है?जवाब- शिक्षा मंत्रालय की 2024 की कोचिंग सेंटर गाइडलाइंस वेऱ मुताबिक, 50 से अधिक छात्रों वाले कोचिंग सेंटर का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है। रजिस्टर्ड कोचिंग की जवाबदेही तय होती है और उससे यह उम्मीद की जाती है कि वह तय प्रशासनिक और सुरक्षा मानकों का पालन करेगी। सवाल- कोचिंग की मान्यता और रजिस्ट्रेशन कैसे चेक करें? जवाब- कोचिंग सेंटर को स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय की तरह मान्यता नहीं मिलती। शिक्षा मंत्रालय की 2024 की कोचिंग सेंटर गाइडलाइंस वेऱ मुताबिक, कोचिंग के लिए सबसे जरूरी बात उसका सरकारी रजिस्ट्रेशन है। इसके चेक करने वेऱ लिए- कोचिंग से रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट दिखाने वेऱ लिए कहें। सर्टिफिकेट पर रजिस्ट्रेशन नंबर जारी करने वाली अथॉरिटी और वैधता देखें। संबंधित विभाग की वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन नंबर से वेरिफिकेशन करें। सवाल- कौन-से 15 संकेत बताते हैं कि कोचिंग सुरक्षित नहीं है? जवाब- अगर आपको लापरवाही वेऱ संकेत नजर आएं, तो वहां बच्चे को एडमिशन दिलाने से पहले दोबारा जरूर सोचें। करियर की दौड़ में कोई भी सफलता बच्चे की सुरक्षा से बड़ी नहीं हो सकती। एक छोटी-सी लापरवाही जिंदगी भर का पछतावा बन सकती है। इसलिए कोचिंग चुनते समय पढ़ाई के साथ सुरक्षा को भी बराबर महत्व दें और पूरी जांच-पड़ताल के बाद ही एडमिशन दिलाएं।

सफाई से जुड़ी कुछ गलतियों में सुधार करना आसान है

हममें से कितने लोग सचमुच जानते हैं कि जिन चीजों का

इस्तेमाल हम दूसरी वस्तुओं की सफाई के लिए करते हैं, उन्हें भी सफाई की जरूरत होती है? मसलन, हम सोफे को वैक्यूम क्लीन करते हैं, कपड़े वॉशिंग मशीन में धोते हैं और ब्रश से टॉयलेट साफ करते हैं। लेकिन कितनी बार आपने इन चीजों को साफ किया था? सोच रहे हैं कि वॉशिंग मशीन कैसे साफ करें? तो बताता हूं कि मैं क्या करता हूं। दो महीने में एक बार, यानी तकरीबन 20 बार वॉशिंग मशीन के इस्तेमाल के बाद मैं फर्श पर बैठता हूं, पुरानी ऑटोमैटिक वॉशिंग मशीन के दाएं कोने में लगे छोटे ढक्कन को किसी चाबी से खोलता हूं, छेद में फंसी गंदगी निकालने के लिए प्लास्टिक नॉब को एंटी-क्लॉकवाइज घुमाता हूं। इससे न सिर्फ गंदा पानी निकलता है, बल्कि कई बार मुझे सिक्के भी मिलते हैं, जिन्हें मैं पैंट से निकालना भूल गया था। वर्षों पहले यह सीक्रेट मुझे मेरे सर्विस वाले ने तब बताया, जब मैंने पानी रिसने की शिकायत की और वह मेरे घर नहीं आना चाहता था। इसके बाद मैं मशीन में थोड़ा डिटर्जेंट डालकर बिना कपड़ों के 30 मिनट के लिए चला देता हूं। सफाई से जुड़ी गलतियां कई तरह की होती हैं और कुछ ज्यादा गंभीर भी होती हैं। ज्यादातर मामलों में इन गलतियों से चीजें उतनी साफ नहीं छूटतीं, जितना हम चाहते हैं। इससे घर की एयर क्वालिटी प्रभावित होती है, या ऐसे अवशेष छूट जाते हैं जिनमें धूल फंस सकती है। जैसे, लॉन्ड्री डिटर्जेंट से फर्श पर पोंछा लगाना।

यह मुझे तब पता चला, जब मैंने हाल ही अपने घर के लिए खरीदी

झाड़ू-पोंछा करने वाली मशीन 'रूम्बा' के बारे में पढ़ा। 'रूम्बा' के काम शुरू करने से पहले मैंने फर्श पर डिटर्जेंट का घोल छिड़का तो देखा कि यह ऐसे अवशेष छोड़ जाता है, जिनमें गंदगी आकर चिपक जाती है। इस गंदगी से मार्बल फ्लोर फीका दिखने लगता है। मुझे यकीन है कि हममें से कई लोग टेबल या शोकेस पर कोई क्लीनिंग लिक्विड स्प्रे करते हैं और इसे सुखाने के लिए मेलामाइन फोम स्पंज फेर देते हैं। यह बिल्कुल गलत है। पहले स्पंज को गीला करना चाहिए और क्लीनिंग लिक्विड को साफ करने वाली जगह पर नहीं, बल्कि स्पंज पर स्प्रे करना चाहिए। मुझे यह तब पता चला जब मेरे शो-केस की सनमाइका शीट की चमक कम होने लगी, क्योंकि मेरी हाउस-हेल्प हमेशा क्लीनिंग लिक्विड को सख्त सतह पर स्प्रे करके स्पंज फेरकर उसे सुखा देती थी। बहुत से लोगों को लगता है कि ज्यादा क्लीनिंग एजेंट इस्तेमाल करने से चीजें ज्यादा साफ होंगी। लेकिन सच इसका उलटा है। स्प्रे, फोम से लेकर पेस्ट और पाउडर तक, किसी भी क्लीनर को ज्यादा लगाने का उल्टा असर होता है। सतह पहले से ज्यादा गंदी हो जाती है। यह बात दो कारणों से सही है। 1. क्लीनिंग एजेंट हटाने में आपको जरूरत से ज्यादा समय देना पड़ेगा। 2. इतना धोने-पोंछने के बाद भी सतह पर एक परत रह सकती है, जिस पर धूल-गंदगी चिपकेगी। सोशल मीडिया पर कुछ वीडियो क्लीनिंग एजेंट्स को मिलाने की सलाह देते हैं। लेकिन अगर आपको उनके साइंटिफिक रिएक्शन नहीं पता तो आप दोनों एजेंट्स को बेअसर कर देंगे। मसलन, बेकिंग सोडा और सिरका (विनेगर) मिलाने पर आपके पास केवल नमक का पानी बचेगा और इससे ज्यादातर चीजें साफ नहीं हो सकतीं। हालांकि इसकी तेज बबलिंग देख कर लगता है कि यह डीप-क्लीन कर रहा है, लेकिन असल में यह दोनों इन्ग्रेडिएंट्स के फायदेमंद गुण खत्म कर देता है।इसी तरह सिरका और डिटर्जेंट को मिलाना भी सही नहीं। सिरके का एसिड डिटर्जेंट के पीएच वैल्यू को बदल सकता है, जो उसके गाढ़ेपन में बदलाव लाकर उसे कम प्रभावी बना देगा। फंडा यह है कि थोड़ी-सी वैज्ञानिक जानकारी के साथ सफाई से जुड़ी आम लेकिन गलत आदतें सुधारी जा सकती हैं। इससे आपका घर ज्यादा साफ रहेगा और आप बड़े नुकसान से भी बचेंगे। एन. रघुरामन

अमेरिका में एआई का विरोध,10 लाख करोड़ के प्रोजेक्ट रद्द,40फीसदी वोटर्स बोले- उद्योगों में एआई पर लगे प्रतिबंध, भविष्य में विवाद बढ़ने की आशंका?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में हो रही तेज प्रगति को लेकर तकनीकी विशेषज्ञ शुरू से? चिंतित रहे हैं, लेकिन अब आम लोग भी इसे लेकर असहज

महसूस करने लगे हैं। पश्चिमी देशों में एआई की लोकप्रियता घट रही है और यह तेजी से राजनीतिक मुद्दा बनता जा रहा है। दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी विरोध बढ़ रहा है।दक्षिण कोरिया में चिप निर्माता कंपनियों के मुनाफे में जबरदस्त बढ़ोतरी के बाद सैमसंग के कर्मचारियों ने विशेष बोनस की मांग करते हुए हड़ताल की चेतावनी दे दी है। अब तक सबसे तीखी बहस अमेरिका में देखने को मिली है। वहां एआई के विरोध में डेटा सेंटरों के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों के कारण करीब 10 लाख करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट अटक गए हैं। वहीं,करीब 40% अमेरिकी मतदाता चाहते हैं कि अधिकांश उद्योगों में एआई के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। एआई के विरोध का एक कारण यह भी है कि एआई कंपनियों के प्रमुख लंबे समय से चेतावनी देते रहे हैं कि एआई करोड़ों नौकरियां खत्म कर सकता है या फिर एआई द्वारा तैयार किया गया कोई सुपर-वायरस मानव सभ्यता के लिए खतरा बन सकता है।अमेरिका में एआई निवेश केवल तकनीकी केंद्रों तक सीमित नहीं है। अमेजन, गूगल, मेटा,माइक्रोसॉफ्ट और ओरेकल जैसी कंपनियां मिशिगन, विस्कॉन्सिन, ओहायो, लुइसियाना,मिसीसिपी और टेक्सास समेत कई राज्यों में भविष्य के डेटा सेंटरों पर 70.85 लाख करोड़ रुपए निवेश कर रही हैं। अनुमान है कि 2026 से 2030 के बीच दुनिया में एआई डेटा सेंटरों पर 283 लाख करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसके चलते एआई की कंप्यूटिंग क्षमता कई गुना बढ़ जाएगी। अमेरिका में डेटा सेंटरों की बिजली खपत मौजूदा 12 गीगावॉट से दशक के अंत तक लगभग पांच गुना यानी करीब 60 गीगावॉट तक हो सकती है। इसी बढ़ती ऊर्जा जरूरत और पर्यावरणीय असर को लेकर विरोध तेज हो रहा है। स्थानीय लोग डेटा सेंटरों के जनरेटर और कूलिंग सिस्टम से होने वाले शोर, नए ट्रांसमिशन टावरों, पानी के संभावित प्रदूषण और बढ़ते बिजली दबाव पर सवाल उठा रहे हैं। कई सर्वेक्षण बताते हैं कि भविष्य में कई अमेरिकी इलाकों में परमाणु संयंत्रों की तुलना में डेटा सेंटर अधिक दिखाई देंगे। यही वजह है कि नवंबर में होने वाले चुनावों में मतदाता गवर्नर पद के उम्मीदवारों से इस मुद्दे पर उनका रुख पूछ रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह विरोध अभी शुरुआती दौर में है। अमेरिका में एआई फिलहाल प्रमुख चुनावी मुद्दों में नीचे है, लेकिन डेटा सेंटरों को लेकर बढ़ती बहस बताती है कि आने वाले वर्षों में यह बड़ा राजनीतिक और सामाजिक मुद्दा बन सकता है। कई अमेरिकी अपने इलाके में डेटासेंटर के बजाय परमाणु रिएक्टर स्थापित किए जाने को बेहतर विकल्प मान रहे हैं। डेटा सेंटरों से जुड़े पर्यावरणीय और सामाजिक सवाल पूरी तरह निराधार नहीं हैं। एआई उद्योग के कई प्रमुख लंबे समय से नौकरियों पर खतरे और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संभावित जोखिमों की चेतावनी देते रहे हैं। विरोध करने वालों का मानना है कि वे पर्यावरण, रोजगार और मानव हितों की रक्षा कर रहे हैं। हालांकि विशेषज्ञ यह भी चेतावनी देते हैं कि अत्यधिक विरोध तकनीकी प्रगति को नुकसान पहुंचा सकता है। एआई से उत्पादकता बढ़ाने, नई दवाएं और इलाज विकसित करने, शिक्षा तथा ग्रीन टेक्नोलॉजी में सुधार की बड़ी संभावनाएं जुड़ी हैं। यदि पश्चिमी देश जनविरोध के दबाव में एआई इंफ्रास्ट्रक्चर को सीमित करते हैं, तो इससे तकनीकी नेतृत्व, साइबर सुरक्षा और रणनीतिक बढ़त कमजोर पड़ सकती है, जिसका लाभ चीन जैसे प्रतिस्पर्धी देशों को मिल सकता है। एआई मॉडल्स के मूल्य इंसानों से अलग:-इकोनॉमिस्ट ने एआई मॉडलों की सोच पर एक रिसर्च की है। ओपनएआई के चैटजीपीटी मॉडल धरती पर किसी अन्य देश के मुकाबले अधिक धर्म निरपेक्ष हैं। गूगल जेमिनाई के मॉडल किसी भी देश के लोगों की तुलना में निजी आजादी को ज्यादा महत्व देते हैं। किसी भी मॉडल ने दुनिया के मामले में अधिकतर अफ्रीकी और मुस्लिम देशों की सोच को जाहिर नहीं किया है। दरअसल एआई अपनी ट्रेनिंग में फीड किए गए डेटा के आधार पर अपनी सोच बनाते हैं। चीन के डेटा पर प्रशिक्षित मॉडल चीनी सरकार के विचारों को जाहिर करते हैं। इस साल के पहले तीन महीनों में बीस प्रोजेक्ट रद्द:-एआई प्रोजेक्ट्स पर जनविरोध का असर पड़ा है। 2026 के पहले तीन महीनों में 3.5 गीगावाट बिजली का संभावित उपयोग करने वाले 3.96 लाख करोड़ रु. के बीस डेटा सेंटर प्रोजेक्ट रद्द कर दिए गए हैं। पिछले तीन वर्षों में अमेजन, मेटा के प्रस्तावित छोटे सेंटरों सहित 8 लाख करोड़ रुपए से अधिक के प्रोजेक्ट रद्द किए जा चुके हैं। सेडार रैपिड्स, आयोवा के निवासी वहां गूगल के प्रोजेक्ट का विरोध कर रहे हैं। मिशिगन में कई शहरों ने डेटा सेंटरों का विरोध किया है। इन 4 बिंदुओं पर फोकस बढ़ाने से कम होगा विरोध:-एआई की बढ़त को बनाए रखने के लिए पश्चिमी देशों के राजनेताओं और एआई कंपनियों को चार बिंदुओं पर खासतौर पर ध्यान देना होगा। 1. लोगों को लगना चाहिए कि एआई की तरक्की में उनका भी फायदा है। 2. एआई से साइबर हमलों, जैविक आतंकवाद और अन्य नुकसान को दूर करने के उपाय जरूरी। 3. जॉब जाने, बिजली बिल बढ़ने और डेटा सेंटरों में पानी के अधिक उपयोग पर बनी गलत धारणाओं को दूर करने के सुझाव। 4. सरकारी कामकाज की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए एआई का उपयोग किया जाए।

फॉलोअर होना बुरा नहीं, पर अपनी राह चले लीडर है वही

सुबह-सवेरे एक महिला एयरपोर्ट में नाइट सूट पहने घूम रही थी। मैंने सोचा, बेचारी लेट हो गई, इसलिए जल्दी में घर से निकल पड़ी। कपड़े बदलने का टाइम नहीं मिला। लेकिन फिर मैंने देखा कि एक नहीं, अनेक महिलाएं नाइट सूट में घूम रही हैं। तो फिर मेरी बत्ती चमकी- यह कोई नया फैशन है? 'हट पगली', मेरी सहेली ने कहा, 'इसको नाइट सूट नहीं, 'कॉर्ड सूट' बोलते हैं। कहते हैं ना अंग्रेजी में को-ऑर्डिनेटेड यानी कि एक जैसा, तो शॉर्ट में को-ऑर्ड और देसी अंदाज में लोग उसे 'कॉर्ड सूट' कहने लगे।' बस, वही नाम चिपक गया और अब महिलाएं इसकी दीवानी हैं। 'मगर क्यों', मैंने सहेली से पूछा? 'जो महिला टेलर को दस हिदायतें देती है कि ब्लाउज की फिटिंग परफेक्ट चाहिए, अब वो इतने लूज कपड़ों में घूम रही है?' सहेली ने कहा, 'हां जी, यही तो कॉर्ड सूट की खासियत है। जैसे आप घर की ड्रेस में फील करते हो, वैसे ही बाहर भी फील कर सकते हो, कॉर्ड सूट पहन कर।' है तो यह ग्लोबल ट्रेंड, मगर देशवासियों के लिए यह एक जाना-पहचाना-सा लुक भी है। आपको वो दिन याद होंगे जब एक घर में 4-6 बच्चे होना आम बात थी, तब भी तो कॉर्ड सेट ही चलते थे। मतलब एक घर के तीन भाई एक ही थान से कपड़ा खरीद कर सेम-टु-सेम शर्ट बनवाते थे। अब इसके दो कारण हो सकते हैं। या तो सस्ता पड़ता होगा, या मां-बाप की सोच थी कि एक-सा पहनेंगे, तो बच्चों में लड़ाई कम होगी। वैसे पुराने टाइम में फोटो सिर्फ खास मौकों पर ली जाती थी, और उन दुर्लभ फोटो में बच्चे जमीन पर आलथी-पालथी मारकर बैठे हुए, एक जैसी ड्रेस में बड़े क्यूट लगते हैं। फिर जैसे-जैसे 'हम दो, हमारे दो' का दौर चला, और फिर 'हम दो, हमारा एक' हुआ, बच्चे हमारे हाथ से निकल गए। चार साल की उम्र के बाद मां-बाप की चॉइस की हर चीज रिजेक्ट हो जाती है। यहां तक कि खुद मां-बाप भी। कोई बात नहीं सिमरन, जी ले अपनी जिंदगी- खरीद ले अपनी पसंद के ब्रांडेड कपड़े! लेकिन अब कपड़े के थान कैसे बिकेंगे? चलो एक नया आइटम निकालते हैं- कॉर्ड सूट। आइडिया अच्छा, मगर नाक-नक्श तो नाइट सूट जैसा है, इसे एक अलग पहचान देनी होगी। जैसे घर का दही दही होता है और दुकान का दही 'योगर्ट', इसी तरह घर का पायजामा जब एटिट्यूड दिखाते हुए निकल पड़ा सैर पर, वो कॉर्ड सूट कहलाता है। ट्रेंड कैसे बनता है? पहले कुछ सेलेब्रिटीज की फोटो छपती है, किसी नई जगह पर नहीं, बल्कि स्पंज पर स्प्रे करना चाहिए। मुझे यह तब पता चला जब मेरे शो-केस की सनमाइका शीट की चमक कम होने लगी, क्योंकि मेरी हाउस-हेल्प हमेशा क्लीनिंग लिक्विड को सख्त सतह पर स्प्रे करके स्पंज फेरकर उसे सुखा देती थी। बहुत से लोगों को लगता है कि ज्यादा क्लीनिंग एजेंट इस्तेमाल करने से चीजें ज्यादा साफ होंगी। लेकिन सच इसका उलटा है। स्प्रे, फोम से लेकर पेस्ट और पाउडर तक, किसी भी क्लीनर को ज्यादा लगाने का उल्टा असर होता है। सतह पहले से ज्यादा गंदी हो जाती है। यह बात दो कारणों से सही है। 1. क्लीनिंग एजेंट हटाने में आपको जरूरत से ज्यादा समय देना पड़ेगा। 2. इतना धोने-पोंछने के बाद भी सतह पर एक परत रह सकती है, जिस पर धूल-गंदगी चिपकेगी। सोशल मीडिया पर कुछ वीडियो क्लीनिंग एजेंट्स को मिलाने की सलाह देते हैं। लेकिन अगर आपको उनके साइंटिफिक रिएक्शन नहीं पता तो आप दोनों एजेंट्स को बेअसर कर देंगे। मसलन, बेकिंग सोडा और सिरका (विनेगर) मिलाने पर आपके पास केवल नमक का पानी बचेगा और इससे ज्यादातर चीजें साफ नहीं हो सकतीं। हालांकि इसकी तेज बबलिंग देख कर लगता है कि यह डीप-क्लीन कर रहा है, लेकिन असल में यह दोनों इन्ग्रेडिएंट्स के फायदेमंद गुण खत्म कर देता है।इसी तरह सिरका और डिटर्जेंट को मिलाना भी सही नहीं। सिरके का एसिड डिटर्जेंट के पीएच वैल्यू को बदल सकता है, जो उसके गाढ़ेपन में बदलाव लाकर उसे कम प्रभावी बना देगा। फंडा यह है कि थोड़ी-सी वैज्ञानिक जानकारी के साथ सफाई से जुड़ी आम लेकिन गलत आदतें सुधारी जा सकती हैं। इससे आपका घर ज्यादा साफ रहेगा और आप बड़े नुकसान से भी बचेंगे। एन. रघुरामन

हर भाषा की अपनी गरिमा है, कभी उसे नीचा ना दिखाएं

भाषा एक घर है। चाहे उसे कुछ लोग कुटिया कहें या कोठी। रहने वालों के लिए वह एक शरण है, जिसमें हमारे जज्बों को, विचारों को अभिव्यक्ति का सामान मिलता है। अगर कुछ सामान उसमें न हो तो हम दूसरी भाषाओं से ले आते हैं और उनको लौटाते नहीं, अपने घर में जोड़ लेते हैं। यह सिलसिला पुराना है।कई बार यह भी होता है कि अपनी पहचान बदलने की इच्छा से हम अपनी भाषा छोड़ नए तरीके अपनाते हैं। मुझे याद है एक पात्र- फातिमा लोखंडवाला। गुजरात की लेखिका इला मेहता का एक उपन्यास है, जिसमें देहात में पली-बढ़ी फातिमा अपनी महदूद जिंदगी से निकलकर कुछ बनना चाहती है। गांव के इकलौते और आजादी के बाद के पहले स्कूल की वह छात्रा है। नई-नई बातें सीखकर घर आकर अपनी मां को बताती है। खदीजा सौराष्ट्र के गांव की बोली में कहती है, 'हाचु? टीचर ऐसे कहती है?' फातिमा उसकी गुजराती सुधारकर कहती है, 'बा, हाचु नहीं साचु।' इस तरह के संवाद को अनुवाद करते हुए मुझे जरूरी लगा कि भाषा के फर्क अंग्रेजी में भी जाहिर हों, ताकि मेरे अंग्रेजी अनुवाद के पाठकों को ख्याल रहे कि बदलाव कई बार भाषा से शुरू होता है। आज का मेरा लेख भाषा की राजनीति के दूसरे पहलू पर है, किंतु मेरा उदाहरण शायद उसमें मददगार होगा। हमारे ही देश के लोग, खास तौर से अंग्रेजी में पढ़ने-लिखने वाले लोग, कई बार दूसरी भारतीय भाषाओं को 'वर्नाकुलर' कहते हैं। मेरा उनसे युद्ध है। हमने यह शब्द अंग्रेजों से सीखा और उन्होंने लैटिन से। अंग्रेजों को संस्कृत में दिलचस्पी थी, क्योंकि उन्हें लगा कि हिंदुस्तान की प्रणालियां समझने की कुंजी संस्कृत के पास थी। इस बात पर ?टिप्पणी दिए बगैर मैं उनकी दूसरी भाषाओं की तरफ के रवैये की बात करना चाहूंगी। हम जिन्हें प्रादेशिक भाषाओं का

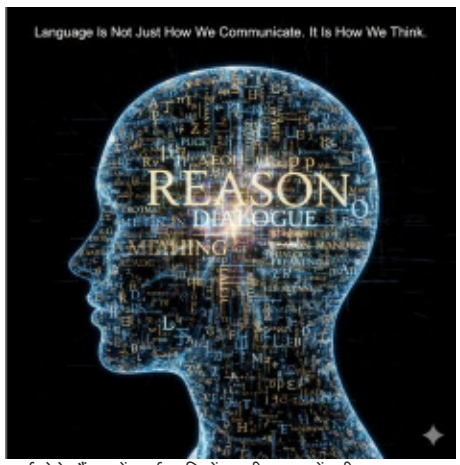

दर्जा देते हैं, उन्हें कई सदियों तक जंगली और अशिष्ट बोलियां समझना अंग्रेजों की खासियत थी। उनसे यह आदत किसी हद तक हमने भी ग्रहण की। जब उन भाषाओं को समझना जरूरी लगा, तब अंग्रेजों ने उन्हें 'वर्नाकुलर' नाम दिया और स्कूलों में उसकी पढ़ाई, उनके शब्दकोश वगैरह बनाने के जतन किए। किंतु इन भाषाओं को कभी बौद्धिक विचारों का माध्यम न माना। आज इन्हीं भाषाओं से साहित्य पर अहम विचार आते हैं। तब यह कलोनियल विभाजन करना बिलकुल नाइंसाफी है। मराठी या हिंदी या गुजराती 'वर्नाकुलर' किस नजरिये से हैं, या किसकी नजर से हैं? मुझे याद है अगर स्कूल में कोई नई छात्रा हिंदी या गुजराती माध्यम से आती तो बाकी के लोग कहते- 'शी इज़ वर्नाक।' मानो कि वह कोई नया प्राणी हो। 'वर्नाकुलरिज्म' का फिर भी अर्थ बनता है कि घर-मोहल्ले-बाजार की भाषाओं की तरफ मुड़ना। लेकिन 'वर्नाक' कहकर एक विशेषण बना देना और इतनी भिन्न भाषाओं को एक शब्द से धिक्कार देना हमारे विचारों और मानसिकता में रहे आए गुलामी के अंश की ओर संकेत करता है। हर भाषा भाषा है। उसकी अपनी गरिमा है। और उस भाषा के बोलने वालों के लिए वह किसी जीवित इंसान जैसी है, जिसने उनका पालन-पोषण किया है। मैं 'डायलेक्ट' शब्द को भी पसंद नहीं करती। हां, मैं मानती हूं कि हमारी शैली के कई स्तर होते हैं। तद्भव स्तर हमारे इलाके, जाति, प्रदेश से बनता है और एक अनुवादक होने के तौर पर मैं उन्हें बरकरार रखने की कोशिश करती हूं। किंतु मुख्य-प्रवाही भाषा से तुलना करके मैं उनकी अवहेलना नहीं करती, और न ही उनको डायलेक्ट का दर्जा देकर गैसलाइट करती हूं। जिन्हें हम 'भाषा' कहते हैं, वह कई कारणों से भाषा बनती है। उनमें शहरी, ऊपरी जाति के लोगों का भी हाथ रहा है। नम्बूदरी लोगों ने मलयालम पर छाप डाली तो नागरों ने गुजराती पर। दलित साहित्य ने भाषा के सवालों को विशिष्ट चुनौती दी है। न सिर्फ भाषा का फर्क, पर जमीन और व्यवसाय से जुड़े समाज के रूढ़ि-प्रयोग, संवाद सबकुछ हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि हम जिसे हेजेमनी या वर्चस्व कहते है, उसका पहला प्रतिबिम्ब तो भाषा पर पड़ता है। हाल ही में एक और कहानी का अनुवाद करते दिलचस्प अनुभव हुआ। दशरथ परमार नामक लेखक की एक कहानी है, जिसमें बैंक के नए मैनेजर के अंग्रेजी में हुक्म करने से उनकी गुजराती कहां की है, मतलब वह किस इलाके और जाति के हैं, उसका पता नहीं चलता। उनके नाम पी.के. गुजराती से भी पता नहीं लगता। लेकिन अंत में भाषा से ही रहस्य खुलता है। हमारे अस्तित्व और हमारी भाषा के बीच बड़ी गहरी कड़ी है। इसलिए भाषा का वर्णन करने वाले शब्द भी हमें जवाबदारी से उपयोग करने होंगे। मुझे याद है बचपन में कई बच्चे निबंध की शुरुआत में कहते थे- 'लैंग्वेज इज अ टूल ऑफ कम्युनिकेशन'। शायद इसी सोच से हम भाषा को लेकर नाइंसाफियां करते रहते हैं। जबकि भाषा एक घर है- फिर चाहे उस कुटिया समझें या कोठी। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,रीटा कोठारी)

बांग्लादेश ने भारत से झोली से निकालकर चीन को क्यों दिया मोंगला पोर्ट, चीन सिर्फ 80 किमी दूर बैठेगा

ढाका। हालांकि इस पर अब तक काम नहीं हुआ है। चीन मोंगला पोर्ट पर 2 काम करेगा-1. पोर्ट का डेवेलपमेंट- चीन मोंगला पोर्ट पर 2 नई कंटेनर जेटी बनाएगा। ये बंदरगाह का वो हिस्सा होते हैं, जहां से कार्गो कंटेनरों को जहाज पर चढ़ाया-उतारा जाता है। कई तरह के कंटेनर यार्ड बनेंगे। कंटेनर उठाने के लिए 4 क्रेन और बांग्लादेश का पहला ऑटोमैटिक ऑपरेटर वाला क्रेन सिस्टम लगाया जाएगा। चीनी बंदरगाहों पर बिना किसी इंसान के इसी सिस्टम से जहाजों पर सामान लादा-उतारा जाता है। इससे मोंगला पोर्ट की सालाना क्षमता करीब ढाई गुना बढ़कर 3.94 लाख टीईयू की हो जाएगी। 1 टीईयू का मतलब 20 फीट लंबाई का एक कंटेनर होता है। 2. पोर्ट के पास इकॉनोमिक जोन-बागेरहाट जिले में मोंगला पोर्ट के पास 110 एकड़ जमीन पर टेलीकॉम और इलेक्ट्रॉनिक सामान की फैक्ट्रियां लगाई जाएंगी। चीन यहां वेयरहाउस बनाकर स्टोरेज फैसिलिटी भी बढ़ाना चाहता है। चीनी एक डिटेल्ड मास्टर प्लान तैयार करेगा। इसके बाद बांग्लादेश समझौते पर आगे बढ़ेगा। बेज़ा के मेंबर मोहम्मद नजरुल इस्लाम के मुताबिक, 'बांग्लादेश जमीन देगा, जबकि चीनी कंपनी इन्वेस्टमेंट और डेवेलपमेंट का काम देखेगी। जमीन के बदले बांग्लादेश को प्रोजेक्ट में हिस्सेदारी मिलेगी या नहीं, ये आगे तय होगा।' 26 जून को बांग्लादेश-चीन के जॉइंट स्टेटमेंट में 2 और प्रोजेक्ट चीन को देने की बात कही गई है। इसमें लिखा है कि दोनों देश चटगांव में चीन के 'इकॉनोमिक और इंडस्ट्रियल जोन' को डेवेलपमेंट करेंगे। साथ ही चीन तीस्ता नदी के प्रबंधन में हर संभव मदद करेगा। भारत के लिए 4 बड़ी दिक्कतें हैं- 1. चीन के मुकाबले कूटनीतिक हार- बांग्लादेश में भारत की उच्चायुक्त रह चुकीं राजदूत वीना सिकरी कहती हैं, 'शेख हसीना सरकार ने मोंगला और तीस्ता प्रोजेक्ट भारत को सौंपे थे। मोहम्मद यूनुस ने उनके फैसले पलट दिया।' फिर तारिक रहमान के पीएम बनने के बाद ये चर्चा हुई कि क्या वे चीन के बजाय भारत को प्राथमिकता देंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब चीन को मोंगला और चटगांव प्रोजेक्ट सौंपना कूटनीतिक तौर पर भारत के लिए एक बड़ा और चिंताजनक बदलाव है।' दरसल, तख्तापलट से पहले जून 2024 में शेख हसीना भारत आई थीं। तब दोनों देशों के जॉइंट स्टेटमेंट में कहा गया था कि मोंगला

और चटगांव में भारत को सौंपे गए दोनों स्पेशल इकॉनोमिक जोन पर जल्दी ही काम शुरू होगा। भारत की मदद से तीस्ता नदी का संरक्षण और प्रबंधन भी किया जाएगा। 2. बंगाल की खाड़ी में भारत के लिए नया खतरा-अब तक बंगाल की खाड़ी में भारत का दबदबा रहा है, लेकिन मोंगला पोर्ट तक चीन की पहुंच से इस इलाके में सामरिक तौर पर भारत के लिए नई चुनौती पैदा होगी। एक बार कंट्रोल में आने के बाद चीन यहां सैन्य बेस भी बना सकता है। इसके दो उदाहरण देखिए- पहला, 2023 में चीनी कंपनियों ने बांग्लादेश के कॉक्स बाजार में पनडुब्बी बेस तैयार कर दिया है। यहां 6 पनडुब्बियां और 8 युद्धपोत खड़े हो सकते हैं। इसके मेंटेनेंस के लिए बांग्लादेश चीन पर निर्भर है। चटगांव और मोंगला तक कई चीनी युद्धपोत भी आते रहे हैं। चीन ने श्रीलंका का हंबनटोटा बंदरगाह भी डेवेलप किया। फिर जब श्रीलंकाई सरकार चीन का कर्ज नहीं चुका पाई, तो चीन को 99 साल के लिए बंदरगाह लीज पर मिल गया। यहां भी चीनी नेवी एक्टिव रहती है। चीन अपने आधे से ज्यादा समुद्री व्यापार के लिए मलक्का स्ट्रेट पर निर्भर है। मोंगला पोर्ट से ये निर्भरता कम हो जाएगी। ऐसे में अगर टकराव की स्थिति बने और भारत मलक्का स्ट्रेट चोक करने की कोशिश करे, तो चीन भी मोंगला के जरिए बंगाल की खाड़ी पर दबाव बढ़ा सकता है। वीना सिकरी कहती हैं, 'चीन के तीस्ता के मैनेजमेंट पर बांग्लादेश से सहमति बनाना, हैरान कर देने वाला और निराशाजनक है। भारत सरकार इस पूरे घटनाक्रम पर बेहद करीब से नजर रखेगी।' दरअसल, तीस्ता नदी सिक्किम से निकलकर पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी से उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाके में उतरती है। यहां से सीमा पार करके बांग्लादेश के रंगपुर डिवीजन में घुसती है। बंगलादेश में लालमनिरहाट जिले के पास तीस्ता नदी पर जो प्रोजेक्ट शुरू किया जाना है, वो 'चिकन नेक' कहे जाने वाले सिलीगुड़ी कॉरिडोर से 100 किमी से भी कम दूरी पर है। 'चिकन नेक' करीब 60 किमी लंबी और सिर्फ 22 किमी चौड़ी जमीनी पट्टी है, जो भारत के नॉर्थ ईस्ट राज्यों को बाकी देश से जोड़ती है। चीन लालमनिरहाट में एक पुराना हवाई अड्डा भी डेवेलप करना चाहता है। चीनी ऑफिसर्स इसका दौरा कर चुके हैं। रणनीतिक मामलों के जानकार ब्रह्म चेलानी कहते हैं, 'लालमनिरहाट एयरबेस एक्टिव हुआ, तो चीन के लिए भारतीय सैन्य ठिकाने, इन्फ्रास्ट्रक्चर खास तौर पर सिलिगुड़ी कॉरिडोर के आसपास की निगरानी करना आसान हो जाएगा।' 4. भारत की बिजनेस कनेक्टिविटी को नुकसान- 2018 में बांग्लादेश ने भारत को चिटगांव और मोंगला दोनों बंदरगाहों तक जहाजों के ट्रांजिट और सामान लादने-उतारने के लिए पूरी पहुंच दी थी। अगर मोंगला पोर्ट का मैनेजमेंट भारत को मिलता, तो भारत को व्यापारिक फायदा होता। भारत के नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों तक लगभग सारा सामान 'चिकन नेक' के एकमात्र सड़क के रास्ते से पहुंचता है। ट्रांसपोर्टेशन के लिहाज से ये रूट लंबा है। उदाहरण के लिए, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला से कोलकाता पोर्ट की सड़क से दूरी 1,600 किलोमीटर है। जबकि मोंगला और चटगांव पोर्ट से अगरतला की दूरी क्रमशः सिर्फ 220 और 330 किमी है। इसके अलावा इकॉनोमिक जोन के तहत पोर्ट के पास ही सामान का प्रोडक्शन करके उसका ट्रांसपोर्ट किया जा सकता था। इससे सामान की लागत कम होती। चीन की मौजूदगी में भारत अब मोंगला से ये फायदे नहीं उठा पाएगा। अब बात आती है की चीन के बढ़ते दबदबे से कैसे निपटेगा भारत? जवाबः हिंद महासागर को भारत का 'आंगन' कहा जाता है, लेकिन यहां चीन अपनी 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' कही जाने वाली स्ट्रैटजी के तहत बंदरगाह, हवाई पट्टी और नेवल बेस बना रहा है। चीनी कंपनियां हिंद महासागर में 17 बंदरगाहों में से 13 का डेवेलपमेंट कर रही हैं, जबकि बाकी प्रोजेक्ट्स में उनकी हिस्सेदारी हैं। हिंद महासागर में चीन की हरकतें भारत के लिए बड़ी चुनौती हैं। इसीलिए भारत भी कई प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहा है। भारत की स्ट्रैटजी का नाम है- 'नेकलेस ऑफ डायमंड'। हालांकि ये भारत सरकार का कोई घोषित प्रोजेक्ट या डॉक्ट्रिन नहीं है।'नेकलेस ऑफ डायमंड' के तहत 4 बड़े काम हो रहे हैं-सिंगापुर, इंडोनेशिया, सेशेल्स, ओमान, ईरान, मंगोलिया, जापान और वियतनाम से साझेदारी और पोर्ट डेवलपमेंट पर काम हो रहा है। भारत यहां नेवल फैसिलिटी भी तैयार कर रहा है। बंगाल की खाड़ी और मलक्का स्ट्रेट पर नजर बनाए रखने के लिए आंध्र प्रदेश के रामबिली गांव में नेवल बेस 'आईएनएस वर्षा' बन रहा है। ये नेवी की न्यूक्लियर सबमरीन्स का ठिकाना है। अंडमान और निकोबार आइलैंड पर आर्मी, एयरफोर्स और नेवी की ट्राई-कमांड बनाई गई है। यहां से भी चीन की हलचलों, बंगाल की खाड़ी और मलक्का स्ट्रेट की निगरानी की जा सकती है। मॉरिशस के अगालेगा आइलैंड पर भारत ने एयर स्ट्रिप और जेटी बनाई हैं, जहां से चीन की हरकतों पर नजर रखी जा सकती है।

टेक्सास डेटा सेंटर-47 लाख करोड़ का प्रोजेक्ट
चीन से प्रतिस्पर्धा में ट्रंप, सुरक्षा की अनदेखी से साइट पर 8,000 वर्कर्स को खतरा

टेक्सास। दुनिया की एआई रेस अब सिर्फ टेक कंपनियों और

सुपरपावर देशों की लड़ाई नहीं रही। इसकी कीमत निर्माण साइटों पर काम कर रहे वर्कर्स भी चुका रहे हैं। अमेरिका के टेक्सास स्थित एबिलीन में बन रहा स्टारगेट डेटा सेंटर 500 अरब डॉलर (47.18 लाख करोड़ रुपए) का मेगा एआई इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट है। इसे ओपनएआई, ओरेकल और सॉफ्टबैंक जैसे दिग्गज मिलकर बना रहे हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प इसे अमेरिका की एआई ताकत का बड़ा दांव बता चुके हैं। मकसद है चीन को एआई रेस में पीछे छोड़ना। लेकिन टाइम की ग्राउंड पड़ताल इस चमकदार प्रोजेक्ट की दूसरी तस्वीर दिखाती है। रिपोर्ट के मुताबिक तेजी से निर्माण की इस अंधी दौड़ में मजदूरों की जान और सुरक्षा को पूरी तरह नजरअंदाज किया जा रहा है। प्रोजेक्ट साइट पर 8,000 मजदूरों के साथ कई हादसे सामने आए हैं। ओशा रिकॉर्ड्स संस्था के मुताबिक 2025 में कई मजदूरों की टांगों में फ्रैक्चर हुआ। एक मजदूर पोर्टा-पॉटी में मृत मिला। दिसंबर 2024 से साइट से 911 पर 14 इमरजेंसी कॉल दर्ज हुईं। इनमें चोट, हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और हार्ट अटैक जैसी मेडिकल इमरजेंसी शामिल थीं। इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहीं दो ठेकेदार कंपनियों पर अदालत में मुकदमे चल रहे हैं। . वर्कर्स को पानी और पंखे तक के लिए 'लग्जरी' बता तरसाया गयाः- वर्कर्स ने साइट के अंदर के हालात को काफी कठिन बताया। एक इलेक्ट्रिशियन ने आरोप लगाया कि टेक्सास की तेज गर्मी में भी साइट पर पीने का पानी आसानी से उपलब्ध नहीं है। वर्कर्स से कहा गया कि ठंडा पानी 'लग्जरी' है, अधिकार नहीं। पंखे भी वापस ले लिए गए। एक वर्कर्स के मुताबिक कूलिंग स्टेशन में ज्यादा समय बिताने पर लिखित चेतावनी दी गई। एक कर्मी ने कहा कि कई को पैनिक अटैक भी आ चुका है। निर्माण की स्पीड बनाए रखने में बुनियादी सुविधाएं भी नहीं दी जा रहीं। पाउंड वजन वाले कांच के पैनल गिर गए। एक मजदूर पोर्टा-पॉटी में मृत मिला। दिसंबर 2024 से साइट से 911 पर 14 इमरजेंसी कॉल दर्ज हुईं। इनमें चोट, हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और हार्ट अटैक जैसी मेडिकल इमरजेंसी शामिल थीं। इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहीं दो ठेकेदार कंपनियों पर अदालत में मुकदमे चल रहे हैं। . वर्कर्स को पानी और पंखे तक के लिए 'लग्जरी' बता तरसाया गयाः- वर्कर्स ने साइट के अंदर के हालात को काफी कठिन बताया। एक इलेक्ट्रिशियन ने आरोप लगाया कि टेक्सास की तेज गर्मी में भी साइट पर पीने का पानी आसानी से उपलब्ध नहीं है। वर्कर्स से कहा गया कि ठंडा पानी 'लग्जरी' है, अधिकार नहीं। पंखे भी वापस ले लिए गए। एक वर्कर्स के मुताबिक कूलिंग स्टेशन में ज्यादा समय बिताने पर लिखित चेतावनी दी गई। एक कर्मी ने कहा कि कई को पैनिक अटैक भी आ चुका है। निर्माण की स्पीड बनाए रखने में बुनियादी सुविधाएं भी नहीं दी जा रहीं।

अगले साल ट्रम्प आ सकते हैं भारत, हैदराबाद में सड़क उनके नाम पर की गई, अमेरिकी राष्ट्रपति बोले- शुक्रिया

वॉशिंगटन/नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प साल 2027 की शुरुआत में भारत आ सकते हैं। न्यूज एजेंसी आईएनएस के मुताबिक, व्हाइट हाउस में मीडिया से बातचीत के दौरान विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने ये बयान दिया। ये ट्रम्प की राष्ट्रपति रहते हुए दूसरी भारत यात्रा हो सकती है। इससे पहले ट्रम्प साल 2020 में पहली बार भारत यात्रा पर आए थे। वे पर टैरिफ, डिफेंस और एआई पर बातचीत संभवः-ट्रेड डील और टैरिफः दोनों देश एक बड़े द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के बेहद करीब हैं। ट्रम्प की नई टैरिफ नीतियों और भारतीय सामानों पर लगने वाले टैक्स को कम करने पर सीधी बात हो सकती है। डिफेंस और मिलिट्री डीलः 'इंडिया-यूएस कॉम्पैक्ट' के तहत दोनों देशों के बीच सैन्य ताकत बढ़ाने और अत्याधुनिक हथियार बनाने की तकनीक शेयर करने

अहमदाबाद में 'नमस्ते ट्रम्प' कार्यक्रम में शामिल हुए थे। रूबियो से पूछा गया कि वे भारत की प्रगति, विकास और वैश्विक स्तर पर प्रधानमंत्री मोदी की भूमिका को कैसे देखते हैं, तो उन्होंने कहा, 'हम पीएम मोदी और उनके द्वारा किए गए कार्यों के बहुत बड़े प्रशंसक हैं।' हैदराबाद में ट्रम्प के नाम पर सड़कः-अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हैदराबाद में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास के पास की सड़क का नाम 'डोनाल्ड ट्रम्प एवेन्यू' रखे जाने पर भारत का धन्यवाद किया है। उन्होंने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा, 'भारत के हैदराबाद में नया डोनाल्ड ट्रम्प एवेन्यू। इस तरह सम्मानित होने वाला मैं पहला अमेरिकी राष्ट्रपति हूं। धन्यवाद! 'ट्रम्प के भारत दौरे पर फैसला हो सकता है। भविष्य की टेक्नोलॉजी (एआई): आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), सेमीकंडक्टर और सुरक्षित ग्लोबल सप्लाई चेन बनाने के लिए दोनों नेता मिलकर काम करने की रणनीति तैयार हो सकती है। वैश्विक सुरक्षा और शांतिः मिडिल ईस्ट में शांति स्थापित करने और वैश्विक तनाव के बीच दोनों देशों के सुरक्षा हितों की रक्षा करने पर अहम चर्चा हो सकती है।भारत और अमेरिका के बीच साल 2025 में रु12.54 लाख करोड़ का व्यापार हुआ। भारत ने अमेरिका को लगभग रु8 लाख करोड़ का सामान एक्सपोर्ट किया। वहीं अमेरिका से भारत ने लगभग रु4.6 लाख करोड़ का सामान इंपोर्ट किया।

मोदी के कैबिनेट से बाहर हो सकते हैं ये 6 मंत्री, 9 नए चेहरों के शामिल होने की सुगबुगाहट-बदलाव के पीछे की पूरी कहानी

नयी दिल्ली। 2 बार राज्यसभा सांसद बने। सितंबर 2017 से केंद्रीय मंत्री हैं। अभी इनके पास पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय है। क्यों

हटाए जा सकते हैंः सेक्स स्कैंडल 'एपस्टीन फाइल्स' में पुरी का नाम जुड़ा। फरवरी में कांग्रेस ने दावा किया कि 2014-17 के बीच पुरी ने जेफरी एपस्टीन से 62 ईमेल एक्सचेंज किए और 14 मीटिंग्स कीं। उन्हें हटाने की एक वजह उनकी उम्र भी हो सकती है। 74 साल के पुरी पिछले 9 साल से मंत्री हैं। 3. रवनीत सिंह बिट्टू, रेल राज्यमंत्री-ये हैं कौनः पंजाब के पूर्व सीएम बेअंत सिंह के पोते रवनीत सिंह बिट्टू कांग्रेस में 3 बार लोकसभा सांसद बने। मार्च 2024 में बीजेपी से जुड़े। फिर राज्यमंत्री बने। अगस्त 2024 में राजस्थान से राज्यसभा पहुंचे। क्यों हटाए जा सकते हैंः 3 जून को बिट्टू ने अगले साल होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव में उतरने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने कहा, 'मैंने लोकसभा और राज्यसभा में 17 साल पूरे कर लिए हैं। मैंने अपना सामान पैक कर लिया है और पंजाब जाने के लिए पूरी तरह तैयार हूं।' 4 जून को बीजेपी ने राज्यसभा के लिए 11 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की। इसमें बिट्टू का नाम नहीं था। 21 जून 2026 को उनका राज्यसभा कार्यकाल खत्म हो गया। बिट्टू बीजेपी को पंजाब की सत्ता तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं। लुधियाना की किसी विधानसभा सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। 4. पंकज चौधरी, वित्त राज्यमंत्री- ये हैं कौनः उत्तर प्रदेश की महाराजगंज सीट से 7 बार के लोकसभा सांसद पंकज चौधरी जुलाई 2021 से वित्त राज्यमंत्री हैं। दिसंबर 2025 में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया। क्यों हटाए जा सकते हैंः बीजेपी की इंटरनल पॉलिसी 'एक व्यक्ति, एक पद' के चलते चौधरी को मोदी कैबिनेट से मुक्त किया जा सकता है, ताकि 2027 यूपी विधानसभा और 2029 लोकसभा चुनाव के लिए उनका पूरा फोकस संगठन और इलेक्शन मैनेजमेंट पर रहे। 5. हर्ष मल्होत्रा, सहकारिता राज्यमंत्री-ये हैं कौनः 2015-16 में पूर्वी दिल्ली नगर निगम के महापौर बने। 2024 में पूर्वी दिल्ली से सांसद और मोदी कैबिनेट में राज्यमंत्री बने। मई 2026 में दिल्ली बीजेपी के अध्यक्ष बने। क्यों हटाए जा सकते हैंः बीजेपी की 'एक व्यक्ति, एक पद' की नीति के तहत 62 साल के मल्होत्रा को कैबिनेट से हटाया जा सकता है। 6. जॉर्ज कुरियन, अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री-ये हैं कौनः सुप्रीम कोर्ट में वकील रहे। जून 2024 में मोदी सरकार में राज्य मंत्री बने। अल्पसंख्यक कार्य और मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय का जिम्मा संभाला। अगस्त 2024 में मध्यप्रदेश से राज्यसभा पहुंचे। क्यों इस्तीफा दियाः 23 जून को मोदी कैबिनेट के इकलौते ईसाई मंत्री कुरियन ने इस्तीफा दे दिया। इसकी एक वजह अप्रैल-मई में हुआ केरलम विधानसभा चुनाव भी है। बीजेपी को उम्मीद से कमतर नतीजे मिले। 65 साल के कुरियन ने भी चुनाव लड़ा, लेकिन 'कंजिराप्पल्ली' सीट पर वे तीसरे नंबर पर रहे। कैटेगरी02- 1. शक्तिकांत दास-ये हैं कौनः तमिलनाडु कैडर के 1980 बैच के रिटायर्ड आईएएस अफसर शक्तिकांत दास पीएम मोदी के प्रधान सचिव-2 हैं। आर्थिक मामलों के सचिव, राजस्व सचिव, फैसले- नोटबंदी और जीएसटी लागू करने में दास की अहम भूमिका रही। बतौर आरबीआई गवर्नर 3 बार कार्यकाल विस्तार मिलना उन पर मोदी सरकार के भरोसे का सबूत है। इस दौरान दास ने भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाए रखा, डिजिटल पेमेंट्स को बढ़ावा दिया और बैंकिंग रेगुलेशन मजबूत किया। सरकार को उम्मीद है कि प्रशासनिक और आर्थिक समझ रखने वाले दास वित्तीय स्थिति को मजबूत करेंगे। 2. अनुराग

परफॉर्मेंस नहीं तो छुट्टी तय

ठाकुर-ये हैं कौनः हिमाचल प्रदेश के पूर्व सीएम प्रेम कुमार धूमल के बेटे हैं। बीसीसीआई के अध्यक्ष रहे। हमीरपुर लोकसभा सीट से लगातार 5वीं बार सांसद बने। एंट्री क्यों हो सकती हैः मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में अनुराग राज्यमंत्री और कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। तब बतौर सूचना एवं प्रसारण मंत्री उनका रिपोर्ट कार्ड अच्छा था। अगले साल हिमाचल में विधानसभा चुनाव हैं। बीजेपी चाहती है कि अनुराग के बूते युवा वोटर्स को लामबंद करके मौजूदा कांग्रेस सरकार हटाए और सत्ता में आए। 3. वीडी शर्मा-ये हैं कौनः मध्यप्रदेश से आने वाले वीडी शर्मा पुराने स्वयंसेवक माने जाते हैं। 3 दशकों तक आरएसएस और एबीवीपी में काम किया। 2013 में बीजेपी में एक्टिव हुए। 2020 से 2025 तक बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष रहे। अभी खजुराहो से लगातार दूसरी बार सांसद हैं।एंट्री क्यों हो सकती हैः मध्यप्रदेश के ज्यादातर राष्ट्रीय नेताओं को राज्य की राजनीति तक सीमित कर दिया गया है। जैसे- नरेंद्र सिंह तोमर, कैलाश विजयवर्गीय, प्रह्लाद सिंह पटेल। 55 साल के वीडी शर्मा को केंद्र में मंत्री पद देकर बीजेपी मध्यप्रदेश से अगली पीढ़ी के राष्ट्रीय नेता तैयार करना चाहती है।पार्टी में वीडी की छवि मजबूत संगठनकारी नेता की है। उनके अध्यक्ष रहते बीजेपी ने 2024 में मध्यप्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटें जीतीं। 4. तरुण चुग-ये हैं कौनः पंजाब के अमृतसर से आते हैं। आरएसएस का बैकग्राउंड है। 2 बार विधानसभा चुनाव लड़ चुके हैं, लेकिन जीते नहीं। 2018 से वे बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव हैं। एंट्री क्यों हो सकती हैः हाल ही में हुए राज्यसभा चुनाव में बीजेपी ने पंजाब के कोटे से चुग को मध्यप्रदेश से उतारा और वे जीते भी। चुग को रवनीत सिंह बिट्टू की जगह राज्यसभा सीट मिली और अब मंत्री पद भी मिल सकता है। 5. राघव चड्ढा-ये हैं कौनः चार्टर्ड अकाउंटेंट से नेता बने। अरविंद केजरीवाल के करीबी रहे। 2020 में दिल्ली के राजेंद्र नगर से विधायक बने। दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष बने। 2022 में पंजाब से राज्यसभा पहुंचे। एंट्री क्यों हो सकती हैः अप्रैल में राघव ने आप के 6 अन्य राज्यसभा सांसदों के साथ बीजेपी जॉइन कर ली।

बीजेपी की कोशिश हैः अगले साल पंजाब में होने वाले विधानसभा चुनाव में राघव के बूते आप को हराना। दरअसल, पंजाब के पिछले विधानसभा चुनाव में राघव ने आप के लिए ग्राउंड वर्किंग और इलेक्शन मैनेजमेंट किया था। उन्हें आप की अंदरूनी बातें पता हैं। राघव बीजेपी के लिए पंजाब में एग्रेसिव कैम्पेन कर सकते हैं। शहरी इलाकों और जेन-जी वोटर्स में बीजेपी के लिए पैठ बना सकते हैं। 6. श्रीकांत शिंदे- ये हैं कौनः महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे के बेटे हैं। कल्याण सीट से लगातार तीसरी बार सांसद।एंट्री क्यों हो सकती हैः शिवसेना (उद्धव गुट) के 6 लोकसभा सांसदों तोड़ने के लिए हुए 'ऑपरेशन टाइगर' में श्रीकांत ने अहम भूमिका निभाई। इनाम के तौर पर मंत्री पद मिल सकता है। 7. संजय दीना पाटिल- ये हैं कौनः एनसीपी से राजनीति शुरू की। मुंबई की भांडुप से विधायक रहे। 2009 में उत्तर-पूर्वी मुंबई से लोकसभा सांसद बने। 2022 में शिवसेना (उद्धव) से जुड़े और 2024 में दोबारा लोकसभा सांसद बने। एंट्री क्यों हो सकती हैः 'ऑपरेशन टाइगर' के चलते पाटिल शिवसेना (शिंदे) में आए हैं। बागी होने के इनाम के तौर पर संजय को भी मंत्री पद मिल सकता है। इसके पीछे स्ट्रैटजी हैः शिवसेना (उद्धव) को और कमजोर करना, बीजेपी वाले 'महायुति गठबंधन' को मजबूत करना। 8. काकोली घोष दस्तीदार-ये हैं कौनः डॉक्टर से नेता बनीं काकोली पश्चिम बंगाल की बारासात सीट से लगातार चौथी बार सांसद हैं।

टीएमसी की संस्थापक सदस्य और पूर्व सीएम ममता बनर्जी की करीबी रहीं। एंट्री क्यों हो सकती हैः काकोली नेतृत्व में 20 टीएमसी सांसद बागी हो गए। बाद में एनसीपीआई से जुड़े और बीजेपी को सपोर्ट दिया। इस टूट के इनाम के तौर पर काकोली को मंत्री बनाया जा सकता है। 9. अरुण गोविल-ये हैं कौनः 'रामायण' सीरियल में भगवान राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल। 2021 में वे बीजेपी से जुड़े। 2024 में उत्तर प्रदेश की मेरठ लोकसभा सीट से सांसद बने। एंट्री क्यों हो सकती हैः अगले साल उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव हैं। सोशल इंजीनियरिंग के तहत गोविल को मंत्री बनाया जा सकता है। गोविल पश्चिमी यूपी के वैश्य समाज से आते हैं। उनके बूते बीजेपी हिंदुत्व और सांस्कृतिक मुद्दे को भुना सकती है। कैटेगरी03-1. निर्मला सीतारमण, वित्त मंत्री- ये हैं कौनः कर्नाटक से आने वाली निर्मला सीतारमण 2014 से राज्यसभा सांसद हैं। 2017 में वे रक्षा मंत्री बनीं।

2019 से वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री हैं। मंत्रालय क्यों बदल सकता हैः सरकार और भारत की माली हालात कुछ महीनों से ठीक नहीं है। महंगाई पिछले 16 महीने के ऊंचे स्तर पर 3.9फीसदी पर पहुंच गई है। जबकि पीएम मोदी का लक्ष्य हैं- भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी और ग्लोबल मैन्युफेक्चरिंग हब बनाना। सरकार को लग रहा है कि किसी टेक्नोक्रेट को वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी दी जाए। ऐसे में निर्मला की जगह आरबीआई गवर्नर रहे शक्तिकांत दास को लाया जा सकता है। निर्मला को शिक्षा मंत्रालय मिल सकता है। 2. ज्योतिरादित्य सिंधिया, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री- ये हैं कौनः मध्यप्रदेश के कद्दावर नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया 2020 में कांग्रेस से बीजेपी में आए। जुलाई 2021 में मोदी सरकार में मंत्री बने। नागरिक उड्डयन और दूरसंचार जैसे मंत्रालय संभाले। अभी उनके पास पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास और संचार मंत्रालय का जिम्मा है। मंत्रालय क्यों बदल सकता हैः सिंधिया 'हाई-परफॉर्मिंग' और डिलीवर करने वाले नेता माने जाते हैं। उनकी क्षमता और प्रभाव को देखते हुए उन्हें प्रमोट करने की तैयारी है। उन्हें रेल, वाणिज्य, उद्योग जैसा कोई अहम मंत्रालय मिल सकता है। 3. प्रह्लाद जोशी, नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री-ये हैं कौनः कर्नाटक बीजेपी के अध्यक्ष रहे प्रहलाद जोशी धारवाड़ से लगातार 5वीं बार सांसद हैं। मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में संसदीय कार्य, कोयला और खनन मंत्री रहे। अभी वे नवीकरणीय ऊर्जा और उपभोक्ता मामलों के मंत्री हैं। मंत्रालय क्यों बदल सकता हैः जोशी के सांगठनिक और संसदीय अनुभव के मद्देनजर उन्हें किसी बड़े या ज्यादा राजनीतिक प्रभाव वाले मंत्रालय का जिम्मा मिल सकता है। 2028 में जोशी के गृह राज्य कर्नाटक में विधानसभा चुनाव हैं, जहां बीजेपी को उम्मीदें हैं। 2014 से केंद्र में काबिज बीजेपी की मोदी सरकार में अब तक 4 बड़े फेरबदल हो चुके हैं।मोदी कैबिनेट में हुए फेरबदल में कुछ ट्रेंड नजर आते हैं-1. परफॉर्मेंस नहीं तो छुट्टी तय। कॉर्पोरेट कंपनियों की तरह मोदी सरकार में भी अगर कोई मंत्री उम्मीदों पर खरा नहीं उतरता या उसके मंत्रालय से जुड़ा कोई विवाद खड़ा हुआ, तो बिना किसी हिचकिचाहट के उसकी छुट्टी कर दी जाती है। मीटू मामले में घिरे विदेश राज्यमंत्री एमजे अकबर ने 2018 में इस्तीफा दिया था। 2021 में कोरोना महामारी के मिस-मैनेजमेंट के बाद तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन को हटाया गया था। बतौर आईटी मिनिस्टर रविशंकर प्रसाद, शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक और पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर को अच्छा प्रदर्शन न होने के कारण कैबिनेट से बाहर कर दिया गया था। 2. नौकरशाहों और एक्सपर्ट्स पर भरोसा-मोदी सरकार में सिर्फ पारंपरिक नेता ही मंत्री नहीं बनते, बल्कि जटिल और अहम मंत्रालयों का जिम्मा पूर्व आईएएस, आईएफएस अफसर या डोमेन एक्सपर्ट्स (टेक्नोक्रेट्स) को देने का चलन भी है।

जैसे- पूर्व विदेश सचिव एस. जयशंकर को विदेश मंत्री बनाना, पूर्व आईएएस अफसर अश्विनी वैष्णव को रेल और आईटी मंत्रालय सौंपना, पूर्व आईएएस अफसर अर्जुन राम मेघवाल और रिटायर्ड आईएफएस अफसर हरदीप सिंह पुरी को केंद्रीय मंत्री बनाना।

3. चुनावी राज्यों की इंजीनियरिंग-मोदी सरकार में ये पैटर्न रहा है कि हर कैबिनेट फेरबदल में अगले विधानसभा चुनावों की सोशल और इलेक्टोरल इंजीनियरिंग को सेट किया जाता है। जुलाई 2021 में मोदी कैबिनेट का सबसे बड़ा फेरबदल हुआ।

तब उत्तर प्रदेश के पंकज चौधरी, अजय मिश्रा टेनी, अनुप्रिया सिंह पटेल, एसपी सिंह बघेल, भानु प्रताप सिंह वर्मा, कौशल किशोर; गुजरात के महेंद्र मुंजापारा, दर्शना जरदोश, देवूसिंह चौहान जैसे नेताओं को मंत्री बनाया गया था।

इसके पीछे 2022 में होने वाले विधानसभा चुनाव थे। 4. 'एक व्यक्ति, एक पद' की पॉलिसी-बीजेपी बार-बार ये बात दोहराती है कि वे 'एक व्यक्ति, एक पद' की नीति अपनाती हैं। यानी कोई नेता सरकार और संगठन दोनों में एक साथ बड़े पद नहीं पा सकता। जैसे- 2014 में राजनाथ सिंह गृहमंत्री बने, तो 2 महीने बाद बीजेपी अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

2019 में जब अमित शाह गृहमंत्री बने, तो अगले ही महीने जगत प्रकाश नड्डा को कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया गया और 8 महीने बाद शाह ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

जनवरी 2026 में जब नितिन नबीन पार्टी अध्यक्ष बने, तो उन्हें बिहार सरकार में मंत्री पद छोड़ना पड़ा।

दुबई के अस्पताल में भर्ती हुईं जैस्मिन भसीन,बर्थडे मनाने बॉयफ्रेंड के साथ गई थीं, गंभीर इन्फेक्शन के कारण बिगड़ी तबीयत

दुबई। टीवी एक्ट्रेस जैस्मिन भसीन की दुबई में बर्थडे सेलिब्रेशन के दौरान अचानक तबीयत बिगड़ गई, जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा है। जैस्मिन अपने बॉयफ्रेंड अली गोनी के साथ जन्मदिन मनाने दुबई गई थीं। अली गोनी ने सोशल मीडिया पर अस्पताल से तस्वीरें और वीडियो शेयर कर बताया कि जैस्मिन को एक गंभीर इन्फेक्शन हुआ है और वे अभी डॉक्टरों की देखरेख में रिकवर कर रही हैं। अली ने प्रशंसकों से जैस्मिन के जल्द ठीक होने के लिए दुआ करने की अपील की है। बर्थडे मनाने गए थे, अस्पताल पहुंच गए अली गोनी ने इंस्टाग्राम पर अस्पताल के कमरे से कई तस्वीरें शेयर की हैं। एक तस्वीर में वे अस्पताल के बेड पर

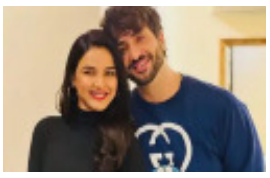

आराम कर रही जैस्मिन को गले लगाते दिख रहे हैं। वहीं दूसरी तस्वीर में जैस्मिन व्हीलचेयर पर बैठी नजर आ रही हैं। अली ने एक वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें जैस्मिन अस्पताल के कमरे के अंदर ही अपना बर्थडे केक काट रही हैं। इन तस्वीरों के साथ अली ने एक भावुक नोट लिखकर जैस्मिन के बीमार होने की जानकारी दी। बोले- दर्द में देखना सबसे मुश्किल काम अली गोनी ने अपनी पोस्ट में लिखा कि हम यहां तुम्हारा जन्मदिन मनाने आए थे, लेकिन जिंदगी की कुछ और ही प्लानिंग थी। जन्मदिन की अच्छी यादें बनाने के बजाय हम इस समय अस्पताल के कमरे में हैं। तुम्हें इस तरह दर्द में देखना इस पूरी ट्रिप का सबसे मुश्किल हिस्सा रहा है। अली ने आगे लिखा कि वे जैस्मिन को फिर से स्वस्थ और मुस्कुराते हुए देखने के लिए किसी भी तरह का सेलिब्रेशन छोड़ने को तैयार हैं। अली ने कहा- गंभीर इन्फेक्शन से जूझ रही हैं जैस्मिन लगातार आ रहे फोन और मैसेज के बाद अली गोनी ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर हेल्थ अपडेट शेयर किया। उन्होंने लिखा कि मैसेज और कॉल करने के लिए सभी का शुक्रिया। जैस्मिन अचानक बहुत बीमार हो गईं और गंभीर इन्फेक्शन की वजह से उन्हें अस्पताल में एडमिट करना पड़ा। पिछले कुछ दिन हमारे लिए बहुत मुश्किल और भावुक रहे हैं। अली ने माफी मांगते हुए कहा कि वे अभी किसी का फोन नहीं उठा पा रहे हैं, क्योंकि उनका पूरा ध्यान जैस्मिन की देखभाल पर है।

शिशु के बर्थमार्क को अनदेखा न करें, ये हेमेंजियोमा हो सकता है, डॉक्टर से जानें इसके कारण, लक्षण और इलाज

जयपुर। कुछ नवजात शिशुओं में जन्म के बाद स्किन पर लाल, बैंगनी या भूरे रंग का उभरा हुआ दाग दिखाई देता है। अक्सर पेरेंट्स इसे देखकर घबरा जाते हैं। यह लक्षण 'इन्फैंटाइल हेमेंजियोमा' का संकेत हो सकता है, जो एक नॉन-कैंसरस ट्यूमर है। इसे 'स्ट्रॉबेरी बर्थमार्क' भी कहा जाता है। यह जन्म के कुछ सप्ताह बाद दिखाई देता है और तेजी से बढ़ता है। अगर यह आंख, गले या रीढ़ के पास हो तो परेशानी बढ़ जाती है। मई, 2022 में 'फ्रंटियर इन फॉर्माकोलॉजी' जर्नल में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, दुनिया में एक वर्ष की उम्र तक लगभग 5-10इ बच्चों को हेमेंजियोमा होता है। साल 2003, में 'इंडियन जर्नल ऑफ डर्मेटोलॉजी, वेनेरियोलॉजी एंड लेप्रोलॉजी' में पब्लिश स्टडी के मुताबिक, भारत में हेमेंजियोमा की दर 4.3फीसदी है। ये दर कई देशों की तुलना में ज्यादा है। हालांकि अच्छी बात ये है कि सही समय पर पहचान, निगरानी और इलाज से इसे ठीक किया जा सकता है। इसलिए आज फिजिकल हेल्थ कॉलम में हम हेमेंजियोमा के बारे में विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- हेमेंजियोमा से क्या कॉम्प्लिकेशंस हो सकते हैं? किस स्थिति में डॉक्टर को दिखाना चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. मनीष मित्तल, सीनियर कंसल्टेंट, पीडियाट्रिक्स, कोकून हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से।

सवाल- हेमेंजियोमा क्या है? जवाब- विस्तार से पॉइंटर्स में समझिए- हेमेंजियोमा ब्लड वेसल्स से बना एक नॉन-कैंसरस ट्यूमर या बर्थमार्क है। यह तब बनता है, जब छोटी ब्लड वेसल्स असामान्य रूप से बढ़कर एक जगह गुच्छे की तरह जमा हो जाती हैं।

यह आमतौर पर जन्म के कुछ दिनों या हफ्तों बाद शिशुओं की स्किन पर लाल या बैंगनी उभरे हुए निशान के रूप में दिखाई देता है।

ज्यादातर मामले जन्म के पहले साल में तेजी से बढ़ते हैं और फिर धीरे-धीरे अपने आप ठीक हो जाते हैं।

अगर यह आंख, नाक, मुंह या अन्य सेंसिटिव ऑर्गन्स के पास हो, बहुत बड़ा हो जाए या ब्लीडिंग और इन्फेक्शन जैसी समस्याएं पैदा करे, तो इलाज की जरूरत पड़ सकती है।

सवाल- हेमेंजियोमा क्यों होता है? जवाब- इसके सटीक कारण का पता अभी नहीं चल पाया है। माना जाता है कि यह ब्लड वेसल्स की कोशिकाओं के जरूरत से ज्यादा बढ़ने के कारण होता है। रिसर्च के मुताबिक, प्री-मैच्योर बर्थ, जन्म से कम वजन वाले शिशुओं और लड़कियों में इसका रिस्क ज्यादा देखा गया है। यह किसी संक्रमण, चोट या माता-पिता की गलती के कारण नहीं होता।

सवाल- क्या हेमेंजियोमा जन्मजात भी होता है? जवाब- हां, कुछ बच्चों में यह जन्म के समय मौजूद होता है। इसे 'कंजेनिटल हेमेंजियोमा' कहा जाता है।

हालांकि अधिकतर मामलों में यह जन्म के पहले कुछ हफ्तों में दिखाई देता है। कुछ जन्मजात हेमेंजियोमा समय के साथ अपने-आप ठीक हो जाते हैं, जबकि कुछ बने रह सकते हैं।

सवाल- जन्म के कितने समय बाद हेमेंजियोमा के लक्षण उभरने शुरू होते हैं? किन संकेतों से पता चलता है कि बच्चे को हेमेंजियोमा हो सकता है?

जवाब- इसके लक्षण अक्सर जन्म के कुछ समय बाद दिखाई देते हैं। कुछ मामलों में यह जन्म के पहले वर्ष में भी डेवलप होता है। ये शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकता है, लेकिन कुछ खास हिस्सों में यह ज्यादा होता है।

सवाल- अगर कोई बच्चा हेमेंजियोमा के साथ पैदा हुआ है तो इस कारण उसे क्या हेल्थ कॉम्प्लिकेशन हो सकते हैं?

जवाब- हेमेंजियोमा के कारण आमतौर पर कोई खास समस्या नहीं होती, जब तक वह शरीर के किसी सेंसिटिव हिस्से में न हो।

आंखों के आसपास होने पर यह नाजुक टिश्यू पर दबाव डाल सकता है और उन्हें नुकसान पहुंचा सकता है।

इससे विजन संबंधी समस्याएं जैसे एम्ब्लियोपिया (लेजी आई), ग्लूकोमा या मोतियाबिंद का रिस्क हो सकता है।

ठुड्डी या गर्दन पर होने पर यह श्वासनली पर दबाव डालकर सांस रुकने जैसी स्थिति पैदा कर सकता है।रीढ़ के आसपास बढ़ने पर यह स्पाइनल कॉर्ड को नुकसान पहुंचा सकता है।

अगर यह शरीर के अंदर (खासकर लिवर में) हो तो इंटरनल ऑर्गन्स के काम को बाधित कर सकता है।

सवाल- क्या हेमेंजियोमा जेनेटिक भी होता है? अगर माता-पिता को है तो क्या बच्चे को भी हो सकता है? जवाब- हेमेंजियोमा जेनेटिक बीमारी नहीं है। यह ब्लड वेसल्स का एक नॉन-कैंसरस ट्यूमर है, जो ज्यादातर जन्म के बाद विकसित होता है, न कि जेनेटिक रूप से ट्रांसफर होता है।हालांकि बहुत रेयर मामलों में फैमिली पैटर्न देखा गया है। लेकिन यह सीधे तौर पर जेनेटिक नहीं है। सवाल- वयस्कों में हेमेंजियोमा के लक्षण क्या होते हैं?जवाब- वयस्कों में हेमेंजियोमा अक्सर स्किन पर छोटे, उभरे हुए लाल या बैंगनी धब्बे के रूप में दिखाई देता है। इसे 'चेरी हेमेंजियोमा' कहा जाता है।

ज्यादातर मामलों में इसमें दर्द नहीं होता, न ही कोई नुकसान होता है। 75 साल से ज्यादा उम्र के लगभग 4 में से 3 लोगों में चेरी हेमेंजियोमा होता है। वयस्कों में ये अपने-आप खत्म नहीं होता है। सवाल- किन लोगों को हेमेंजियोमा का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- हेमेंजियोमा का जोखिम इन लोगों में ज्यादा होता है- नवजात शिशु समय से पहले जन्मे (प्रीमैच्योर) बच्चे कन्या शिशु (लड़कों की तुलना में ज्यादा) गोरी स्किन वाले लोगों में। जियोमा एक नॉन-कैंसरस ट्यूमर है, जो ज्यादातर नवजात शिशुओं में होता है। समय के साथ यह अपने आप ठीक भी हो जाता है। लेकिन अगर यह तेजी से बढ़े, रंग बदले या ब्लीडिंग हो तो तुरंत डॉक्टर को दिखाएं।

सवाल- डॉक्टर हेमेंजियोमा की पहचान (डायग्नोसिस) कैसे करते हैं? जवाब- डॉक्टर हेमेंजियोमा की पहचान फिजिकल एग्जामिन से करते हैं। जरूरत पड़ने पर अल्ट्रासाउंड जैसी इमेजिंग जांच की जाती है, जिससे ब्लड फ्लो को देखा जा सके।

कुछ मामलों में एमआरआई की सलाह दी जा सकती है, ताकि अंदरूनी हिस्सों और संभावित जोखिमों की जांच हो सके। टिश्यू की जांच (बायोप्सी), ब्लड टेस्ट या जेनेटिक टेस्ट भी किए जा सकते हैं।

हर मामले में इनकी जरूरत नहीं होती है। सवाल- हेमेंजियोमा का इलाज क्या है? जवाब- इसका इलाज हेमेंजियोमा के प्रकार, साइज और स्थान पर निर्भर करता है। कई मामलों में केवल निगरानी की जाती है, क्योंकि शिशुओं में यह समय के साथ छोटा हो सकता है।

खासकर तब, जब इसमें बदलाव दिखे या यह किसी संवेदनशील हिस्से के पास हो। हेमेंजियोमा से जुड़े कुछ कॉमन सवाल-जवाब- सवाल- हेमेंजियोमा और साधारण बर्थमार्क में क्या अंतर है? जवाब- हेमेंजियोमा ब्लड वेसल्स से बना एक प्रकार का बर्थमार्क है।

यह अक्सर जन्म के बाद बढ़ता है और समय के साथ छोटा हो सकता है। वहीं साधारण बर्थमार्क आमतौर पर स्थिर रहता है और तेजी से नहीं बढ़ता है।

सवाल- क्या हेमेंजियोमा एक प्रकार का ट्यूमर है? जवाब- हां, हेमेंजियोमा एक प्रकार का नॉन-कैंसरस ट्यूमर है। यह ब्लड वेसल्स से बनता है और शरीर के अन्य हिस्सों में फैलता नहीं है।सवाल- हेमेंजियोमा कितने प्रकार का होता है? जवाब- हेमेंजियोमा के दो प्रमुख प्रकार होते हैं। कैपिलरी हेमेंजियोमाः यह स्किन की ऊपरी परत में दिखाई देता है।

कैवर्नस हेमेंजियोमाः यह स्किन की अंदरूनी हिस्सों में बनता है। सवाल- हेमेंजियोमा के कितने फेज होते हैं? जवाब- बच्चों में हेमेंजियोमा के दो फेज होते हैं। पहला फेज प्रोलिफरेशन है, जिसमें यह तेजी से बढ़ता है।

यह आमतौर पर जन्म के पहले 12 महीनों में होता है। दूसरा फेज इनवोल्यूशन है, जिसमें यह धीरे-धीरे छोटा होने लगता है। ज्यादातर बच्चों में यह 5 साल तक खत्म हो जाता है। लगभग 90फीसदी बच्चों में 9 साल तक पूरी तरह ठीक हो जाता है।

सवाल- क्या हेमेंजियोमा लाइफ थ्रेटनिंग भी हो सकता है? जवाब- आमतौर पर हेमेंजियोमा लाइफ थ्रेटनिंग नहीं होता है। लेकिन अगर यह शरीर के किसी महत्वपूर्ण हिस्से जैसे आंख, गर्दन या इंटरनल ऑर्गन्स के पास हो तो गंभीर समस्या पैदा कर सकता है। स्थिति की गंभीरता उसकी जगह और साइज पर निर्भर करती है।

एफएसएसएआई (FSSAI) की मानसून सेफ्टी गाइडलाइंस,किचन, कुकिंग और पर्सनल हाइजीन से लेकर बच्चों की हेल्थ और सेफ्टी के जरूरी टिप्स

कानपूर। बारिश का मौसम गर्मी से राहत देता है। लेकिन बारिश आते ही खानपान और साफ-सफाई से जुड़ी कई स्वास्थ्य समस्याओं का रिस्क भी बढ़ जाता है। बारिश में नमी बढ़ने के कारण बैक्टीरिया और फंगस तेजी से पनपते हैं। इससे फूड पॉइजनिंग, दस्त, उल्टी और स्टमक इंफेक्शन के मामले बढ़ जाते हैं।थोड़ी-सी लापरवाही भी बीमारी की वजह बन सकती है। ऐसे में पर्सनल हाइजीन और खानपान का खास ख्याल रखना जरूरी है। 'फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया' (एफएसएसएआई) ने मानसून में बीमारियों से बचने के लिए जरूरी फूड सेफ्टी गाइडलाइन जारी की है। इसमें किचन की सफाई, पर्सनल हाइजीन और खाने को सही तरीके से स्टोर करने से जुड़ी सावधानियां बताई गई हैं। इसलिए, 'जरूरत की खबर' में आज हम एफएसएसएआई की मानसून फूड सेफ्टी गाइडलाइन की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-बारिश में इन्फेक्शन और बीमारियों का रिस्क क्यों बढ़ता है? बारिश में हाइजीन मेंटेन करने के लिए किन बातों का ध्यान रखें? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. आशीष मेहरोत्रा, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन एंड क्रिटिकल केयर, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, कानपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- एफएसएसएआई ने मानसून के लिए फूड सेफ्टी गाइडलाइन जारी की है। ये गाइडलाइन क्या कहती है? जवाब- एफएसएसएआई ने अपनी गाइडलाइन में पर्सनल हाइजीन, फूड स्टोरेज और किचन की साफ-सफाई पर खास ध्यान देने की बात कही है। जैसेकि- खाना बनाने से पहले और बाद में हाथों को अच्छी तरह धोएं। किचन की सतह सैनिटाइज करें और बर्तनों को अच्छे से साफ करें। फ्रिज रेगुलर साफ करें और हर दो हफ्ते में डिफ्रॉस्ट करें। खाना हमेशा अच्छी तरह पकाकर खाएं। बचे हुए भोजन को तुरंत फ्रिज में रखें और देर तक बाहर न छोड़ें। फल-सब्जियों को साफ पानी से धोएं, साफ कपड़े पहनें। खाना बनाते समय मोबाइल फोन यूज न करें। सवाल- इस गाइडलाइन की जरूरत क्यों है? जवाब- मानसून में ज्यादा नमी और गंदगी के कारण बैक्टीरिया, फंगस और वायरस तेजी से पनपते हैं। इस दौरान पानी और खाना जल्दी दूषित हो जाता है। इससे फूड पॉइजनिंग, डायरिया और अन्य संक्रमण का रिस्क बढ़ता है। ऐसे में लोगों को हेल्थ सेफ्टी से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए गाइडलाइन जरूरी है ताकि वे बीमारियों से बचाव कर सकें। सवाल- मानसून में इन्फेक्शन और बीमारियों का रिस्क क्यों बढ़ता है? जवाब- बारिश में तापमान और नमी के उतार-चढ़ाव के कारण इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है। इससे बीमारियों का रिस्क बढ़ जाता है। 1. बारिश का पानी जमना- बारिश का रुका हुआ पानी मच्छरों के पनपने की आदर्श जगह बन जाता है। इसमें डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया के मच्छर पनपते हैं। 2. नमी में कीटाणुओं का पनपना-हवा में बढ़ी नमी बैक्टीरिया, वायरस और फंगस की ग्रोथ को बढ़ावा देती है। 3. पानी और खाने में संक्रमण-बारिश का पानी अक्सर गंदगी, सीवर और कचरे के संपर्क में आकर दूषित हो जाता है। मानसून में पानी और खाद्य पदार्थ आसानी से संक्रमित हो सकते हैं। 4. धूप कम निकलना-कम धूप मिलने से कई रोगाणु लंबे समय तक जीवित रह सकते हैं। 5. इम्यूनिटी कमजोर होना-तापमान और नमी में बदलाव शरीर की इम्यूनिटी को कमजोर करता है।सवाल- एफएसएसएआई की गाइडलाइन हाइजीन पर सबसे ज्यादा जोर देती है। सही हाइजीन मेंटेन करने के लिए किन बातों का ध्यान रखें? जवाब- स्वस्थ जीवन के लिए हाइजीन बहुत जरूरी है। ये सेहत की बुनियाद है। एफएसएसएआई की एडवाइजरी में हाइजीन को इन जरूरी कैटेगरीज में बांटा गया है- किचन हाइजीन, फूड हाइजीन, कुकिंग हाइजीन, वाटर हाइजीन, होम हाइजीन, पर्सनल हाइजीन, बच्चों के लिए हाइजीन आइए, अब इन हाइजीन पर बात करते हैं- किचन हाइजीन-बारिश में किचन में नमी और गंदगी जल्दी जमा होती है। इससे बैक्टीरिया और फंगस पनपते हैं, जो खाने को दूषित कर सकते हैं। किचन की सतह, बर्तन, सिंक और स्टोरेज एरिया की रेगुलर सफाई न होने पर फूड कंटैमिनेशन का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए किचन को हमेशा साफ और सूखा रखना चाहिए। खासतौर पर सिंक, किचन प्लेटफॉर्म, ड्रेन और कूड़ेदान की सफाई पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि ये जगहें बैक्टीरिया के पनपने के लिए सबसे अनुकूल होती हैं। फूड हाइजीन बारिश में तापमान और नमी बढ़ने से खाना जल्दी खराब हो सकता है। इसलिए ताजा और अच्छी तरह पका भोजन खाएं। पका हुआ भोजन 2 घंटे से ज्यादा कमरे के तापमान पर न छोड़ें। जरूरत हो तो तुरंत फ्रिज में रखें। खुला खाना मक्खियों, धूल और हवा में मौजूद रोगाणुओं के संपर्क में आकर दूषित हो सकता है।दूध, दही, पनीर, मांस और पके हुए भोजन को उचित तापमान पर स्टोर करें, वरना उनमें बैक्टीरिया तेजी से बढ़ सकते हैं। क्रॉस-कंटैमिनेशन से बचने के लिए कच्ची सब्जियों, मांस और पके भोजन को अलग-अलग रखें। लंबे समय से कटे हुए फल, सलाद या खुले में रखे खाद्य पदार्थ न खाएं।

कुकिंग हाइजीन टिप्स-बारिश में खाना बनाते समय साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। गंदे हाथों, बिना धुले बर्तनों या दूषित सामग्री के इस्तेमाल से खाना संक्रमित हो सकता है।

इसलिए खाना बनाने से पहले और बीच-बीच में हाथ धोएं। कच्चे और पके हुए भोजन के लिए अलग बर्तन और चॉपिंग बोर्ड का इस्तेमाल करें। वाटर हाइजीन- मानसून में पानी दूषित होने का रिस्क बढ़ जाता है। दूषित पानी पीने से दस्त, टाइफाइड, कॉलरा और अन्य वाटरबोर्न डिजीज हो सकती हैं।इसलिए केवल साफ, उबला हुआ या फिल्टर किया हुआ पानी ही पिएं।

पानी की टंकियों और स्टोरेज कंटेनर्स की रेगुलर सफाई भी जरूरी है। होम हाइजीन-बारिश के दौरान घर में सीलन, नमी और गंदगी बढ़ सकती है। ये बैक्टीरिया, फंगस और मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल है। इसलिए बारिश में घर को साफ और सूखा रखना बहुत जरूरी है। खासतौर पर बाथरूम, किचन और उन जगहों की रेगुलर सफाई करें, जहां पानी जमा हो जाता है। पर्सनल हाइजीन-मानसून में पर्सनल हाइजीन बनाए रखना संक्रमण से बचाव का सबसे कारगर तरीका है। गंदे हाथों, गीले कपड़ों या खराब पर्सनल हाइजीन से बीमारियों का रिस्क बढ़ता है। इसलिए दिन में कई बार हाथ धोएं। रोज नहाएं और साफ व सूखे कपड़े पहनें। बच्चों के लिए हाइजीन-बच्चों की इम्यूनिटी वयस्कों की तुलना में कमजोर होती है। इसलिए मानसून में उन्हें संक्रमण का रिस्क ज्यादा होता है। बच्चों को सिखाएं कि बाहर से आकर साबुन से हाथ धोएं, पैरों को रगड़कर साफ करें। बच्चों को सिखाएं कि खुला या सड़क किनारे का खाना नुकसानदायक है। उनके नाखून और अन्य हाइजीन का भी ध्यान रखें। कुल मिलाकर, साफ-सफाई से जुड़ी छोटी-छोटी आदतें फूड पॉइजनिंग, दस्त, टाइफाइड, कॉलरा और अन्य इन्फेक्शन के रिस्क को काफी हद तक कम कर सकती हैं। इसलिए बारिश के मौसम में हाइजीन को अपनी डेली रूटीन का हिस्सा बनाएं। स्वस्थ और सुरक्षित रहें।

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।